ओ३म्

आर्य वन्दना

ओ३म्

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

महात्मा विरजानन्द जी अपने शिष्यों से विपुल प्रेमबद्ध भी थे। एक दिन सायं समय उन्हें पता लगा कि उनका एक शिष्य आज इसलिए अध्ययनार्थ नहीं आया कि वह किसी पीड़ा विशेष से अत्यन्त पीड़ित है। उसी समय एक–दूसरे शिष्य को संग लेकर उस शिष्य के गृह पर पहुँचे और आश्वासन देते हुए बड़ी देर तक उसके पास बैठे रहे। स्वामी दयानन्द जी पर तो उनकी अपार प्रीति थी। उन्होंने अपने सारे शिष्यों के समक्ष कई बार यह कहा कि मेरे शिष्यों में योग्य तो एक दयानन्द ही है। यही एक मेरे आशय को पूर्णरीति से समझा है। मुझे इस पर भरोसा है कि यह अपनी विद्या को सफल करेगा।

श्री दयानन्द जी की तर्कशैली पर भी श्री विरजानन्द जी मोहित थे। विद्या विनोद में किसी–किसी दिन गुरू–शिष्य में परस्पर युक्ति–प्रयुक्ति बाण–वर्षा होने लग जाती तो द्रोण–अर्जुन संग्राम का समय बन्ध जाता था। विरजानन्द जी अपने शिष्य के तर्क चातुर्य की प्रशंसा करने लग जाते थे। कभी–कभी तो विरजानन्द जी कह देते थे–"दयानन्द! तुमसे कोई क्या वाद करे ? तुम तो कालजिह्वा हो! जैसे काल सब पर बली है, वैसे तुम्हारी तर्क–शक्ति भी प्रबल है। सब कुमतों का खण्डन करने में समर्थ है।"

श्री विरजानन्द जी के निकट दयानन्द जी के अतिरिक्त अन्य भी अनेक शिष्य अध्ययन करते थे। परन्तु उनकी तर्क–शक्ति प्रबल न थी। गुरूजी जैसा पाठ पढ़ाते, शास्त्र की जैसी व्याख्या करते वे सब सुनते चले जाते थे। बीच में कोई प्रश्नोत्तर करने का साहस न करता था। परन्तु जब श्री दयानन्द जी अध्ययन करने आते थे तो मध्य में बार–बार प्रश्नोत्तर छिड़ जाते थे, तर्क की झड़ी लग जाती थी, युक्तियों–प्रयुक्तियों का तार बन्ध जाता था। गुरू जी प्रायः कह दिया करते थे– "दयानन्द! आज तक मैंने बहुतेरे विद्यार्थियों को पढ़ाया परन्तु जो स्वाद, जो आनन्द तुम्हें पढ़ाने में आता है, वह अन्य किसी को भी पढ़ाने में आज तक नहीं आया।"

–श्रीमद् दयानन्द प्रकाश

मुक्तक

तूफानों से डरकर नैय्या पार नहीं होती, जनसेवा बिना जय-जयकार नहीं होती।
बातों के हवाई महल बनाने वालो, माली बिना मधुवन में बहार नहीं होती।

****

खून निर्दोषों का बहाना मानव का धर्म नहीं है, बसंत को पतझड़ बनाना शुभ कर्म नहीं है।
आतंकवादी बनकर जनता का खून पीने वालो, घरों का दीपक बुझाना जीवन का मर्म नहीं है।

-कृष्ण चन्द आर्य

यह अंक डी. ए. वी. सुन्दरनगर के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक आर्य समाज मण्डी के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ६६वां विक्रमी सम्वत् २०७२ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११६ अगस्त २०१५

आर्य वीरदल शिविर

♦रामफल सिंह आर्य, महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के तत्वावधान में आर्य वीरदल (हि.प्र.) का प्रशिक्षण शिविर दिनांक ३० जून २०१५ से ५ जुलाई २०१५ तक आर्य समाज मन्दिर सुन्दरनगर कालौनी में लगाया गया। इस शिविर में कुल्लू, कण्डाघाट, धर्मशाला एवं सुन्दरनगर के विद्यार्थियों लगभग ७० की संख्या में भाग लिया। इस शिविर में युवकों को आत्मरक्षा के उपायः–लाठी, जूडो कराटे, तलवार आदि का एवं विभिन्न व्यायाम यथा : आसन, प्राणायाम, दण्ड बैठक तथा रस्से पर मलखम्ब आदि का प्रशिक्षण सार्वदेशिक आर्यवीर दल के शिक्षक श्री हरि ओम जी एवं दिल्ली प्रदेश के शिक्षक श्री प्रेम कुमार जी द्वारा दिया गया। बौद्धिक प्रशिक्षण श्री रामफल सिंह आर्य द्वारा दिया गया। शिविर का प्रबन्धन एवं व्यवस्था हेतु श्री श्रवण आर्य प्रान्तीय संचालक आर्यवीर दल (हि.प्र.), श्री पवन आर्य, बसन्त सिंह आर्य, श्री बलदेव सिंह रगां कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा मन्त्री आर्य समाज, श्री नरेश काम्बोज, शमशेर सिंह, राजेश रावल, राजेन्द्र लोहान तथा श्री श्याम देव उप्पल का श्रेष्ठ एवं निष्काय सहयोग प्राप्त हुआ।

दिनांक ४ जुलाई २०१५ की सायंकाल को एक भव्य शोभा यात्रा, कालौनी में निकाली गई जिसमें विभिन्न स्थानों पर आर्य वीरों का भव्य व्यायाम प्रदर्शन भी हुआ जिसकी सब लोगों ने मुक्तकंठ से सराहना की। शोभा यात्रा में श्रीमती लीला नरूला एवं श्रीमती रानी आर्या के मधुर भजन, गीत आदि चलते रहे। शिविर का समापन श्री प्रबोध चन्द्र सूद, प्रधान आर्य प्रति. सभा (हि.प्र.) की अध्यक्षता में हुआ। यज्ञ के उपरान्त श्री रामफल सिंह आर्य के संयोजन से कार्यक्रम चला।आर्यवीरों का व्यायाम प्रदर्शन हुआ जिसकी सभी उपस्थित आर्यजनों ने सराहना की। समापन समारोह में हमीरपुर, कुल्लू आदि स्थानों से भी आर्यजन पधारे थे। श्री प्रबोध सूद, सत्यपाल भटनागर, रामफल सिंह आर्य ने आर्यवीरों को उद्बोधन दिया।

आर्यवीरों के भोजन आदि के लिये सर्व श्री श्यामदेव उप्पल, श्रीमती सुमीता वर्मा, दीपक, विमल शर्मा, नरेश काम्बोज, सत्यप्रकाश शर्मा, राजेश रावल, शमशेर सिंह, आर्या भारती, डी.ए.वी. विद्यालय, प्रेम सोनी, जैन करियाना स्टोर, लीला नरूला, सुशील मोंगा एवं रामफल सिंह आर्य का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। लंगर की व्यवस्था श्री श्रवण कुमार की ओर से की गई।

शिविर पूर्ण सफलता सहित समाप्त हुआ और बाहर से पधारे हुए महानुभावों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मोबाइल : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

आज के युग में वरिष्ठ नागरिकों का जीवन सुखमय, आनन्दमय होने की जगह दुःखमय और कष्टमय क्यों होता जा रहा है। यह बात समझ से बाहर है। आज ५८ साल के आयु के ऊपर लगभग सभी पैंशनरों को सरकार द्वारा पैंशन दी जाती है जो पति–पत्नी के लिए सुखमय ढ़ंग से जीवनयापन करने के लिए पर्याप्त होती है। फिर भी इस दिशा में भटकन सोच और समझ से बाहर है। आज हमारे वरिष्ठ नागरिकों के जीवन में यदि दुःख, भय और शोक के बादल मंडराते हैं तो इसका मुख्य कारण, यदि हम तनिक पिछले जीवन को झांक कर देखे तो इसका ज्ञान स्वयं ही हो जाएगा। वास्तव में ६० साल की आयु तक पहुंचते जीवन का सूर्य अस्तांचल की ओर सरकना शुरू कर देता है। इस समय तक मुनष्य पर्याप्त सुख–दुःख, बसंत–पतझड़ और धूप–छाया की अनुभूति कर चुका होता है। उसके जीवन में ताप–संताप, विषाद और विवाद को सहने की शक्ति पर्याप्त हो जाती है। वह जीवन में हर बात को सोच समझकर तर्कों और प्रमाणों के द्वारा स्वीकार करता है। वरिष्ठ नागरिकों को जीवन के आखिरी पड़ाव में अपने पूर्वजों के जीवन पर झांकने और चलने का मौका मिलता है। हमारे पूर्वजों की यह विशेषता थी कि वे सदा धर्म की रक्षा करते थे और धर्म उनकी रक्षा करता था। वे गुप्त जी के शब्दों में

कर्म से ही कर्म का थे नाश करना जानते,
करते वही थे वे जिसे कर्तव्य वे थे मानते।

आज हमें उन अलौकिक विभूतियों के जीवन को अवलोकित करते हुए उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करने की आवश्यकता है ताकि मानव जीवन सुख–शांत और आनंददायक बन सके। दुःखों का नाश और सुखों की अमृत वर्षा होती रहे। वास्तव में बुढ़ापा जीवन का आखिरी पड़ाव होता है। इसमें हमें अर्थात् वरिष्ठ नागरिकों को सोच–समझ कर आगे कदम धरने चाहिए ताकि हम जीवन में पर्याप्त धन और यश कमा सकें। वास्तव में वृद्धजनों को लेकर समाज के दूसरे व्यक्तियों को उनके प्रति एक विशेष श्रद्धा और प्रेम दिखाई देना चाहिए। मुझे याद है कि सुन्दरनगर कालौनी में एक बार परम् आदरणीय पं. केदार नाथ शर्मा के गुरू ठहरे थे। कुछ महिलाएं उनसे मिलने के लिए वहाँ आई। दैवयोग से मैं भी स्वामी जी के पास खड़ा था और वे महिलाएं स्वामी जी का अभिवादन करने के लिए आई थी। स्वामी जी ने उनसे पूछा कि मेरे पास क्यों आई हैं ? उन सभी ने हाथ जोड़कर कहा कि स्वामी जी हम सब आप के दर्शन करने के लिए आई हैं। स्वामी जी ने हँसते हुए उत्तर दिया कि मेरी आयु ८५ साल से ऊपर हो गई है और दाढ़ी के बाल भी सफेद हो गए हैं। तो फिर मेरे दर्शनों में क्या रखा है ? इस पर वे महिलाएँ बोली कि स्वामी जी आप के दर्शन में अपार और अलौकिक शांति की अनूभुति होती है। आप का जीवन प्रेरणामय, स्तुत्य और शलाघ्य है। स्वामी जी ने वहाँ उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिस व्यक्ति ने आयु पर्यन्त अच्छे, नेक और सराहनीय कर्म किए हैं वो दूसरे की आंखों का तारा होता है। स्वतः ही लोग उसके ज्ञान की अमृत धारा का पान करने के लिए उत्सुक रहते हैं। स्वामी जी ने आगे कहा कि एक जलती हुई मोमबत्ती बुझी हुई मोमबत्ती को प्रकाशित कर सकती है। परन्तु स्वयं बुझी हुई मोमबत्ती दूसरी मोमबत्ती को कभी भी प्रकाशित नहीं कर सकती। यह जीवन का अनमोल सत्य है। सारगर्भित व्यक्ति ही दूसरों के जीवन को आलौकित, पुष्पित और पल्लवित कर सकता है। सारहीन व्यक्ति वेपैंदे लोटे की तरह जीवन भर लुढ़कता रहता है तथा उल्ट–पुल्ट बातें कर व्यर्थ में अपने जीवन के अनमोल समय को वर्बाद करता रहता है और कुछ भी नहीं कर पाता।

आदर्शमय, प्रेरणामय और आनंदमय जीवन वही है जिसके शरीर के त्याग के उपरांत भी व्यक्ति विशेष की अनमोल स्मृतियों ही उसके मरणोपरांत भी याद रहें। कबीर के शब्दों में वही जीवन धन्य है :

कबीरा हम जन्मियां जग हंसे हम रोये,
ऐसी करनी कर चले, हम हंसे जग रोये।

मानव को जीवनभर सुकृत्यों के बीज बोकर उनकी खेती करनी चाहिए। वास्तव में हमारे संस्कार ही हमारे जीवन का निर्माण करते हैं और इसे सफल प्रेरणामय बनाते हैं। हमें जीवन में आ रही आंधियों और तुफानों का डटकर मुकाबला करना चाहिए और कभी भी और किसी भी स्थिति में घुटनाटेक नीति नहीं अपनानी चाहिए। वास्तव में सदा और सर्वदा सब को आनन्दित रखने की यही नीति और उपाय है कि हमें दूसरे के जीवन में ज़हर नहीं घोलना चाहिए। उसे प्रेरणा पुंज बनाते रहना चाहिए। तभी हम जीवन में उत्थान के शिखर पर पहुंचने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

–कृष्ण चन्द आर्य

उन्हें चुटकुले व किस्से पसन्द न थे

♦इन्द्रजित्‌देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

स्वनामधन्य श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी का जन्म हापुड़ (उत्तर प्रदेश) में रामनवमी के दिन हुआ था तथा इसी आधार पर उनके परिवार ने उनका नाम रामचन्द्र रखा था। आर्यसमाज, हापुड़ अपना वार्षिकोत्सव भी उनके जन्म दिवस व रामनवमी के अवसर पर प्रतिवर्ष मनाता है। सन् १९५८ अथवा १९५९ में अपने वार्षिकोत्सव पर उस समाज ने मुझे आमन्त्रित किया था। मेरे अतिरिक्त दो–तीन संन्यासी व विद्वान् उपदेशक भी वहाँ पधारे थे। श्री पं. रामचन्द्र देहलवी तो उत्सव की शोभा में अभिवृद्धि कर ही रहे थे।

वहाँ पहुँचने से पूर्व ही मैनें सुन रखा था कि श्री पं. जी अपने प्रवचन के उपरान्त किसी ने भी भजन श्रोताओं को सुनाने का विरोध करते थे। मैं उस नगर से पूर्व पं. जी के साथ अन्य नगरों में प्रत्यक्ष ऐसा होता हुआ देख भी चुका था। उनका विचार था कि प्रवचनोपरान्त भजन व गीत नहीं सुनाए जाने चाहिए। इससे प्रवचन का अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ता। शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी का विचार इसके विपरीत था। उनका मानना था कि यदि प्रवचन कमजोर होगा, तभी तो उपरान्त में भजन गाने से उसका प्रभाव घटेगा। वे कहा करते थे कि 'प्रवचन पर भजनों से पानी फिर जाता है' ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि जिस खेत में पानी फिर जाएगा, उस खेत की फसल लहलहाएगी ही।

हापुड़ के उस कार्यक्रम में रामनवमी के दिन एक विशेष आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी ने की। मुझे आशंका थी कि पण्डित जी उसमें मुझे बोलने से रोक देंगे, परन्तु उनकी कृपा व श्रोताओं का मेरे प्रति आकर्षण था। इन कारणों से मुझे भी समय दिया गया तो अपने अभ्यास के अनुसार मैंने पहले एक गजल के दो शेयर व तत्पश्चात् कुछ व्याख्यान दिया। मुझसे पूर्व श्री पण्डित जी अपना व्याख्यान दे चुके व मेरी बारी उनके प्रवचन के पश्चात ही आई थी। श्री पण्डित जी के विचार के कारण मैं भयभीत सा था, परन्तु उस दिन मेरा भय उत्साह में परिवर्तित हो गया। सबसे पहले मैंने ग़ज़ल के २ शेयर सुनाए :–

धर्म पर ऋषिवर जैसे ज़हर खाओ तो हम जानें,
पं. लेखराम आर्य मुसाफिर की तरह गर
पेट फड़वाओ तो हम जानें।
मिशन पर गुरू के गुरूदत्त ने अपना जिस्म फूँका,
उस भट्टी में राख तुम भी बनो तो हम मानें।

इन शेयरों को सुनकर श्रोताओं ने करतल ध्वनि से बहुत देर तक मेरा उत्साह बढ़ाया। मेरा भय दूर भाग गया। मैंने श्री पण्डित जी द्वारा विधर्मियों से किए कुछ शास्त्रार्थों की घटनाएं सुनाईं।

उस दिन रामनवमी होने के कारण मैंने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी व सुग्रीव की मैत्री का प्रसंग सुनाना आरम्भ किया। लक्ष्मण जी मूर्च्छित पड़े थे, तो सुग्रीव के परामर्श से वैद्यराज सुषैण को राम जी ने हनुमान के माध्यम से बुलाया। वैद्यराज ने घटना–स्थल पर आने के बाद लक्ष्मण का उपचार करने से इनकार कर दिया। कारण पूछने पर उसने यह बताया कि "मैं लंकेश का वैद्यराज हूँ तथा लंकेश अर्थात् रावण की अनुमति के बिना यहाँ लाया गया हूँ। मेरा धर्म लक्ष्मण का उपचार करने से गिरेगा। अतः मैं यह उपचार नहीं करूँगा। मुझे क्षमा करें।

वैद्य सुषैण की बात सुनकर श्री रामचन्द्र ने कवि के शब्दों में यह कहा :–

चन्द्र टरे, सूर्य टरे, चाहे सब जग टर जाये,
धर्म छोड़ने की कभी राम न देगा राय।

जिस धर्म पर सारा राज्य गया, श्री पितृदेव का मरण हुआ। जिस धर्म पर भाई भरत छूटा, और सीता प्यारी का हरण हुआ। उसी धर्म पर लक्ष्मण भी यदि मरता है तो मर जाए।

मैंने जब यह काव्यांश सुनाया, तो श्रोताओं के नेत्रों से अश्रुधाराएं बहने लगीं। मैंने आगे यह कहा–राम के ये शब्द सुनकर सुषैण भी द्रवित हो गया व बोला–"आर्यपुत्र ! तुम्हारी परीक्षा लेने हेतु ही मैंने अपने धर्म पर प्रश्न किया था। वैद्य धर्म तो सभी रोगियों की सेवा व उपचार करना ही है। मैं लक्ष्मण का उपचार अवश्य ही करूँगा।" मेरी बातें सुनकर सभा के अध्यक्ष श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी अपने आसन से उठ खड़े हो गए व मेरे पास बैठे। उन्होंने मुझे अपनी बाहों में भरकर समेट लिया व बोले–"मैं सभी भजनीकों के द्वारा मेरे बाद गीत व भजन सुनाने का विरोधी नहीं हूँ। पं. कुँवर सुखलाल आर्यमुसाफिर जी को तो सभी उपदेशकों के अन्त में ही बुलवाया जाता रहा है। मैंने उनका कभी भी अपने बाद भजन सुनाने का विरोध नहीं किया। मैंने अपने प्रवचन के बाद उन्हीं भजनों को बोलने का विरोध किया है, जो चुटकुले व किस्से सुना–सुनाकर अपना समय पूरा कर देते हैं। ऐसे लोग मेरे गम्भीर व सिद्धांतनिष्ट प्रवचनों का प्रभाव भी कम कर देते हैं।" श्री पं. जी की बातें सुनकर मैं गद्‌गद् हो गया व उनके चरण–स्पर्श करके उठ खड़ा हुआ।

ज्ञान में परिवर्तन

•रामगोपाल गर्ग, अजमेर

हमारे ज्ञान में जो परिवर्तन होता रहता है, उसका एक कारण है–जीवात्मा का प्रयास और दूसरा कारण है–गुणों का प्रभाव। कहीं–कहीं मुख्य कारण शरीर आदि बन जाते हैं। यद्यपि सर्वत्र जीवात्मा का सहयोग बना रहना आवश्यक है अर्थात् जीव के बिना शरीर तो काम करेगा नहीं। दोनों मिलकर चलते हैं। परन्तु कहीं–कहीं जीवात्मा उन साधनों के प्रभाव को रोक नहीं पाता। मान लीजिए, हम कई दिनों से सोये ही नहीं हैं और यात्रा करनी है। रेल के अन्दर गए तो कहीं जगह नहीं मिल रही है। हमने सोचा छत पर बैठे, परन्तु नींद न आए, नहीं तो मृत्यु हो जाएगी। अब आप कितना ही बल लगाइए नींद आएगी। वह तमोगुण इतना प्रभाव डालेगा कि हम उसको रोक नहीं सकते। अब अतिरुग्णावस्था आ गई। कोई भंयकर रोग हो गया, तो बुद्धि का संतुलन बिगड़ेगा, समाधि वाला नहीं रहेगा। कितना ही बल लगाइए, समाधि नहीं लगेगी। गुणों का, पदार्थों का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ता रहता है।

एक और प्रभाव है–संस्कारों का, चाहे वह जन्म–जन्मान्तरों के हों या इस जन्म के हों। हमने जान लिया कि चोरी नहीं करनी चाहिए। हम पचास वर्ष पूर्व चोरी करते थे और हम पर उसके संस्कार पड़ गए थे। तो इतना ज्ञान–विज्ञान होने पर भी थोड़े से असावधान होते ही चोरी करने की इच्छा होने लगती है। यदि हम उसको रोकेंगे नहीं, तब पहले जैसी मानसिक स्थिति पूरी–पूरी बन जाएगी कि चोरी करना ठीक है। यदि उसको नहीं रोकेंगे, तब शरीर से चोरी कर ही लेंगे।

संस्कारों के बल पर ही ऐसा होता है। हम भी जो योग विद्या पढ़ते–सीखते हैं, आत्मा–परमात्मा के गुण–कर्म–स्वभाव को जानते हैं और परिणाम दुःख आदि का भी अध्ययन करते हैं। इतना जानने–समझने के पश्चात् भी हम उन संस्कारों को रोककर नहीं रखेंगे, उनको निर्बल नहीं बनाएँगे, तो वे ही संस्कार, जिनको हम बुरा मानते और कहते हैं, हमें वैसा ही बना देंगे जैसा योगाभ्यास सीखने–सिखाने से पूर्व थे।

यदि हमने किसी घटना से सम्बद्ध कोई अच्छी वस्तु देखने की स्मृति उभार ली, तो हमारे ऊपर उसका अच्छा प्रभाव पड़ने लगेगा और यदि बुरी वस्तु देखी हो, तब बुरी प्रवृत्तियाँ उभरकर हममें बुरी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न करने लगेंगी। हमने उस प्रवाह को नहीं रोका तो और भी बढ़ता चला जाएगा और हमें न जाने कहाँ पटक देगा।

जीवात्मा की एक स्थिति है–ईश्वर की उपासना में रहना और दूसरी स्थिति है–लौकिक वस्तुओं की उपासना में रहना। वह इन दो में से एक में रहेगा ही। इन दोनों से बाहर नहीं जा सकता। यदि जीवात्मा ईश्वर की उपासना करता है और लौकिक पदार्थों को छोड़ता है, तब ईश्वर की और से उसको ज्ञान मिलता है, आनन्द मिलता है। सब गुण उसमें आ जाएँगे। इसके विपरीत जब वह लौकिक वस्तुओं की उपासना करता है, तब अज्ञान, अधर्म आएंगे। उसको क्लेश पीसने लगेंगे। सारी बुराइयाँ उसको घेरकर खड़ी हो जाएँगी। ये दोनों घटनाएँ सतत होंगी।

जितना–जितना हम अभ्यास करते जाते हैं, उतना–उतना और निपुण होते जाते हैं। यदि हम ईश्वर रूपी निमित्त को उपस्थित रखते हैं, तो नैमित्तिक ज्ञान, बल आदि उत्पन्न होते रहते हैं। जब तक निमित्त बना है, तब तक उसका ज्ञान मिलता रहेगा। निमित्त के हट जाने पर नैमित्तिक गुण भी हमें नहीं मिलेंगे।

माता

माता ममता की मूर्ति और स्नेह की प्रतिमा है। माता जीवन की अमुल्य शक्ति और भक्ति है। बिना माता बच्चे का संसार सूना है और बिना बच्चे के माता की ममता का कोई मुल्य नहीं। माता अनमोल हीरा इसकी तुलना केवल और केवल मात्र कुहीनूर हीरे से की जाती है। बच्चे की एक मुस्कान पर माता का दिल और दिमाग खिल उठता है। बच्चे के हर मुस्कान पर माता अपना संसार उंढेल देती है। माता की मोहमय ममतामयी धड़कन माता की प्यार की शीतल छाया में बैठकर बच्चा फलता–फूलता रहता है। माँ ही बच्चे की सबसे बड़ी डॉक्टर, पालक और पोषक है। माँ की छत्र छाया में बैठकर बच्चा आनन्द की अनुभूति करता है। जो बच्चा मां की छात्रछाया से विहीन है वह केवल और केवल मात्र दुःखों का भण्डार है। बिना माता के छात्रछाया से विहीन संतान दुःख मुक्त और सुख रहित माँ बालक के संतान की सबसे बड़ी शिक्षक, प्रेरक और मार्गदर्शक होती है।

माँ के आशीर्वाद से राम–कृष्ण और बड़े–बड़े ऋषि मुनि संसार के पथ प्रदर्शक थे। मां की प्रेम की छात्रछाया में बैठकर संतान को सभी प्रकार से सुखानुभूति होती है। मां के संबंध में एक कवि का कहना है :–

रंचक रोग होत अंगहीन रही रही देव मनावे।
खान–पान, नींद चली नाहन जागत रेन बचावे।।
ऐसी मोहमय माता से हूरण कभी न हूवे।
उरमें मूर्ति संची उस पग शीश निभाई।।

–भानु शर्मा, खरीहड़ी

आओ हम सब मिलकर श्राद्ध व तर्पण करें

•आचार्य महावीर सिंह, उपाध्यक्ष/प्रबंधक, दयानन्द मठ चम्बा

मेरे प्रियजनों, हृदय में स्थित आत्मीय जनों, ऋग्वेद के अन्दर वर्णित तथा पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज द्वारा व्यवहार में अवतरित कार्यरूप में परिणित दुर्लभ शारद यज्ञ के विषय स्वामी जी हर वर्ष अपने निमंत्रण पत्रों में विस्तृत रूप से चर्चा करते रहते थे। उसकी उपयोगिता, उसके महत्व के विषय में बताते रहे हैं और श्रद्धापूर्वक हर वर्ष इस यज्ञ को करते रहे हैं। यहाँ तक की एक बार नौ दिन व नौ रात्रियों तक इसे निरंतर किया। यह यज्ञों के प्रति पूज्य स्वामी का समर्पण था। औरंगजेब के भाई दारा ने जब उपनिषद पढ़े, उनमें भरे ज्ञान से उसका साक्षात्कार हुआ, तो वह सड़को पर नाचने लगा। यह कहते हुए नाचने लगा कि मिल गया, मिल गया मुझे सब कुछ मिल गया। जीवन में जो प्राप्तव्य है, वह सब मिल गया। ज्ञान का खजाना मिल गया, सुख व शांति का सार मिल गया, अब मुझे और कुछ नहीं चाहिए। ठीक इसी प्रकार स्वामी जी ने अपने स्वाध्याय में, वेदों, उपनिष्दों, स्मृतियों व दर्शनशास्त्रों में यज्ञ की महिमा को पढ़ा, यज्ञ के विषय में जाना, तो उन्होंने भी उन्मुक्त भाव से यज्ञों के प्रति अपने आप को समर्पित कर दिया। अपने जीवन को यज्ञमय बना दिया। यज्ञों को अपने जीवन में उतार दिया, उतारा ही नहीं उन्हें जन–जन के आकर्षण का विषय बनाने का उपक्रम भी करने लगे। यानि वृहत्तर यज्ञों का आयोजन भी करने लगे। मठ में निर्मित भव्य यज्ञशाला का उदघाटन ही सवा करोड़ गायत्री मंत्रों की आहुतियों से किया गया जो कि लगातार साढ़े पाँच मास तक निरन्तर चला। तत्पश्चात एक वर्ष तक निरन्तर चलने वाले यज्ञ का आयोजन किया गया। इसी बीच वेदों का पारायण करते हुए, बीच–बीच में विशेष विषयों को लिए उपस्थित वेद मंत्रों की व्याख्या करते, उन पर प्रवचन देते हुए, ऋग्वेद में वर्णित शारद यज्ञ की ओर इंगित करने वाला मंत्र उपस्थित हुआ। उस पर स्वामी जी ने चिन्तन किया, मनन किया, तत्पश्चात उस पर प्रवचन दिया हम तभी संकल्प कर बैठे कि इस यज्ञ को करेंगे। हर वर्ष करेंगे, और श्रद्धा व निष्ठा से करेंगे। देश, जाति व समाज के कल्याण के लिए करेंगे। विश्व भर के तथा प्राणिमात्र के कल्याण के लिए करेंगे। तभी से यह यज्ञ मठ में निरन्तर हो रहा है। इसके बाद डेढ़ वर्ष तक निरन्तर चलने वाले यज्ञ का भी आयोजन किया गया। जिसकी सुगन्धि वन, उपवनों से आज भी प्रवाहित हो रही है। जिनमें उच्चरित पवित्रवेद मंत्रों की ध्वनियाँ पर्वतों से गिरिगहवरों से टकरा कर प्रतिध्वनित हो रही हैं। दिग दिगान्तरों को गुंजायमान कर रही हैं। यह तो रही पूज्य स्वामी जी महाराज के कृतित्व व व्यक्ति की संक्षिप्त झलक। अब वे असक्त हैं पर भावना तो वही है। उत्साह में तो कोई कमी नहीं है। उन यज्ञों की नैर्यन्तरता के लिए चिन्तापुर है। हृदय में व्याकुलता लिए हुए हैं। मेरे बाद भी यज्ञों का यह क्रम चलता रहेगा, इस बात से सुनिश्चित होना चाहते हैं। इसकी अभिव्यक्ति तो नहीं करते पर हृदय में इस चाहत को लिए उनका मन व्याकुल है, यह हम जानते हैं। अब हम सभी का जो उनसे प्रीति रखते हैं, उनके कार्यों को सराहते हैं, जो उन्हें अपना गुरू मानते हैं अथवा उनके प्रति श्रद्धाभाव रखते हैं। समष्टिगत उनके कार्यो में जो भागीदार बनना चाहते हैं, संसार के उद्धार व प्राणिमात्र के कल्याण के लिए यह कार्य है, यह स्वीकार करते हैं। कर्त्तव्य बनता है कि उनके कार्यों में गतिशीलता बनाए रखें, उन्हें आगे बढ़ाएं।

अब ऋग्वेद के प्रथम मंत्र से अपनी बात को शुरू करता हूँ। वह मंत्र है–अग्निमीडे–हम अग्नि की उपासना करते हैं, उप+आसन अर्थात् हम अग्नि के समीप बैठते हैं। समीप बैठने से तद्गुण तद्स्वभाव मनुष्य के अंदर स्थानांतरित होने शुरू हो जाते हैं। अग्नि के समीप बैठने से आत्मबल बढ़ता है, भय व आशंका दूर होती है और मार्गदर्शन प्राप्त होता है। अग्नि के गुण समाज में जिन–जिन में भी घटते हैं। वे सभी अग्नि स्वरूप हैं। समाज में विद्यमान भय और आशंका को दूर करने वाले जो महापुरूष हैं, हम लोग उनका दामन पकड़े उनके समीप बैठें। उनके मार्गदर्शन में अपने जीवन को चलाएं। श्रद्धापूर्वक उनका अनुगमन करते हुए तदनुकूल व्यवहार और आचरण करते हुए उन्हें तृप्त करें। इसी को श्राद्ध और तर्पण कहते हैं। यह कर्म जीवित पुरूष की विद्यमानता में किया जाए जो लाभकारी है अत्युत्तम है, सार्थक है। मृत्यु के पश्चात् भी किया जाए तो हानिप्रद नहीं है। बशर्ते जीते जी यह कर्म उसके सामने किया जाता रहा हो।

जीते जी दंगम दंगा मरने के बाद पहुंचाए गंगा वाली बात नहीं। मनुष्य जीते जी सूखी रोटी के लिए भी तरसता रहा। मरने के बाद उत्तम से उत्तम पकवानों से ब्राह्मणों को उसके नाम पर भोग कराया जाता है, यह ठीक नहीं। अपने अराध्यों को, अपने पूज्यों को, अपने बुजुर्गों को जीते जी ही श्रद्धापूर्वक उनकी सेवा सुश्रुषा से तदनुकुल कर्मों से तृप्त करना चाहिए। उन्हें संतुष्ट करना चाहिए, यही श्राद्ध और तर्पण का अभिप्राय है।

महाराणा प्रताप मृत्यु शैय्या पर लेटे हैं। लम्बी–लम्बी

श्वासें छोड़ते हुए सामने टक टकी लगाए बैठे हैं। प्राण नहीं निकल पा रहे। चाहते हुए भी प्राण नहीं निकल रहे। राणा के चारों ओर बैठे बफादार सामन्त राणा के एक–एक गतिविधि पर ध्यान टिकाए हुए हैं। टक टकी लगाए बैठे हुए हैं। वे भांप गए जरूर राणा के हृदय में असह्य पीड़ा है। जिसके कारण प्राण नहीं निकल पा रहे हैं। कोई महत्वपूर्ण जिज्ञासा है। जिसके समाधान के बिना वह देह नहीं छोड़ना चाहते। कोई ऐसी बात जो उन्हें काटे जा रही है। सामन्तों ने बेबस आंखों से विराने में ताकते हुए राणा से उदासी लिए हुए मुरझाए चेहरे वाले राणा से जब पूछा–राणा बताओ आपके मन में क्या व्यथा है, कौन सी पीड़ा है जिसके कारण आप व्यथित हो, उदासी लिए हुए हो। जीवन भर आपके हर आदेश पर प्राणों का उत्सर्ग करने वाले हम लोगों के लिए आपका क्या आदेश है ? वह कौन सा प्रिय कर्म है जिसे हम पूरा कर कण्ठ में अटके आपके प्राणों को खुशी–खुशी निकालने में सहायक हो सकें। आपकी व्यथा, आपकी लाचारी हमसे देखी नहीं जा रही। तब राणा ने सभी सामन्तों की ओर नज़रें घुमाकर अपने समीप आने को कहा। सभी सामन्त राणा के समीप आ गए। समीप में आए सभी सामन्तों को राणा ने कहा–मेरे प्रिय सामन्तों, आप लोगों ने अनेक कष्टों को झेलकर भी जीवन भर मेरा साथ दिया। मातृभूमि की आजादी के लिए अपना घरवार, अपनी सुख–सुविधाएं सब न्यौछावर कर दिये। आज मेवाड़ की आजादी शेष है। मेरा बेटा अमर सिंह इस योग्य नहीं कि मेवाड़ को आजाद करा सके। मैं मेवाड़ की आजादी के अधूरे सपने कोलिए जाने को तैयार हूं। यह टीस मेरे दिल में है जिसके कारण प्राण नहीं निकल पा रहे हैं। आप लोग मुझे भरोसा दो कि मेरे स्वपन को आप लोग अपने प्राणार्पण से पूरा करेंगे। यह सुनकर सभी सामन्तों ने अपनी–अपनी तलवरों के मूठ पर हाथ रखकर राणा के सामने प्रतिज्ञा की, राणा हम आपके वफादार सामंत प्रतिज्ञा करते हैं कि हम मेवाड़ की आज़ादी के लिए संघर्ष करते रहेंगे। जब तक मेवाड आजाद नहीं हो जाता तब तक हम न तो घरों में सोयेंगे, न ही धातुओं के बर्तनों में खाना खायेंगे। मेवाड़ की आज़ादी ही हमारे जीवन का लक्ष्य होगा और उसके लिए हम संघर्ष करते रहेंगे। यह सुनकर राणा के मुख पर उदासी के स्थान पर प्रसन्नता ने स्थान ले लिया। मुरझाया हुआ राणा का चेहरा एक आलौकिक तेज से दमकने लगा। चिन्ता व दुख के ज्वार भाटों से आन्दवेलित हृदय सहसा ही शांत हो गया। कष्ट में अटके प्राण आसानी से निकल गए। राणा ने आश्वस्त होकर प्राण त्याग दिए। सामंतो ने अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने का वचन लेकर राणा इहलोक से परलोक की ओर कूचकर गये। राणा के सामन्तो ने श्रद्धा से राणा के कार्यों को पूरा करने का वचन लेकर राणा द्वारा चलाए आजादी के मिशन को जारी रखने की कसमें खाकर राणा को तृप्त कर दिया। प्रियवरो यह है श्राद्ध व तर्पण।

मेरे आत्मीय जनों कई लोग पूछते हैं कि क्या इस बार भी शारद यज्ञ होगा ? उनका यह प्रश्न पुत्र ऋषि कुमार के दिवंगत हो जाने के कारण होता है। मैं उत्तर देता हूं कि शारद यज्ञ होगा। जिस यज्ञ को स्वामी जी महाराज ने बड़े ही श्रद्धा व भक्ति से भर कर आरम्भ किया, जिसको पूरा करने के लिए प्रिय पुत्र ऋषि कुमार ने अपने आप को हमेशा आगे ही आगे रखा। जिसकी सफलता के लिए रात–दिन एक कर देता था। महान् याजक पूज्य स्वामी जी महाराज के आदेश को शिरोधार्य कर पूरे शारद यज्ञ के यजमान के आसन पर सोत्साह शोभायमान होता था। उस शारद यज्ञ को कैसे छोड़ सकते हैं ? जिस शारद यज्ञ को प्राणिमात्र के कल्याण के लिए किया जाता है। जिस शारद यज्ञ को राष्ट्र की वृद्धि व समृद्धि के लिए किया जाता है। जिस शारद यज्ञ को देवों–पितरों की तृप्ति के लिए किया जाता है, जिस शारद यज्ञ में समर्पित हव्य की सुगन्धि सं द्युलोक व अंतरिक्ष लोक सहित पृथ्वी लोक प्रपूरित हो जाती है। जिसकी सुगन्धि को हवाएं अपनी अंतिम सीमा तक पहुंचकर सूर्य की किरणों को लोकान्तरों तक पहुंचा देती हैं। जिसमें समर्पित अपने भाग को ग्रहण करने के लिए दिव्य लोकों में रहने वाले दिव्य आत्माएं, देवगण, पितृगण, ऋषि, महर्षिगण प्रतीक्षारत्त रहते हैं, ऐसे शारद यज्ञ को कैसे छोड़ दें। प्रिय बेटे के वियोग में इसे त्यागने की अपेक्षा इसे और भी उत्साह व उमंग में भर कर श्रद्धा से करना चाहिए क्योंकि उन देवों–पितरों की श्रेणी में वह भी विद्यमान होगा। जिस शारद यज्ञ को वह निष्ठा से करता रहा। अपने द्वारा प्रदत्त हवियों से दिव्य पुरूषों को तृप्त करता रहा जिनके परिणाम स्वरूप उन दिव्य जनों ने उन दिव्य लोकों में उसे स्थान दिया। अपने पास बुलाया, आज वह भी उन दिव्य पुरूषों के साथ बैठा इस शारद यज्ञ की प्रतीक्षा में होगा। इसमें प्रदत्त हव्य को देवों, पितरों के साथ ग्रहण करने के लिए लालायित होगा। हम उन्हें निराश कैसे कर सकते हैं। इस यज्ञ के माध्यम से उन दिवंगत आत्माओं का, दिव्य पुरूषों का, देवों पितरों का भाग अवश्य होगा। उन्हें तृप्त करने का उपक्रम अवश्य होगा। मेरे प्रियजनों आओ हम सब मिलकर इस यज्ञ को श्रद्धा भक्ति से करें, पूरी निष्ठा से करें। यज्ञ की सुगन्धि से जहां सुगन्धित सुरमियां बहेंगी, दिव्यजन तृप्त होंगे कि मेरे बाद भी वे दिव्य लोकों की ओर प्रस्थान

करेंगे, तो पूर्णरूप से निश्चिंत होकर प्रस्थान करेंगे। चिन्ता व आशंका का भाव उनके मन में नहीं रहेगा। यही हमारा उनके लिए श्राद्ध एवं तर्पण होगा। प्रिय पुत्र ऋषि कुमार भी संभवतः यही सोचकर कि पूज्य पिता जी यानि मैं आप सब के साथ मिलकर पूज्य स्वामी जी महाराज को श्राद्ध व तर्पण कर जब यहां से विदा करें, तो वह अन्य दिव्यजनों के साथ मिलकर दिव्य लोकों में उनका स्वातग करेंगे। उनके लिए स्थान सुरक्षित रखेंगे। सौ यज्ञों को पूर्ण करने के बाद जब राजा नहुष को स्वर्ग में ले जाने लगा तो इन्द्र ने उन्हें स्वर्ग में स्थान नहीं दिया, उन्हें स्वर्ग में नहीं आने दिया। यही स्थिति स्वामी जी के साथ न हो, इसलिए स्वामी जी का चहेता हम सब का लाड़ला, ऋषि कुमार स्वामी जी से पूर्वही चला गया। मेरे प्रिय जनों सभी आज से ही यज्ञ में भाग लेने का मन बना सीटें आरक्षित करा लो। यज्ञमान के इच्छुक याज्ञक पूर्व ही नाम प्रेषित कर दें। रहने व खाने की सुविधा न देखें। इस सब में असुविधा हो सकती है, क्योंकि इस समय मैं अकेला हूं। अधूरा हूं। हां आप सब का भरपूर सहयोग मिला तो सब ठीक भी हो सकता है पर लक्ष्य तो यज्ञ कर बना कर आएं। सुख–सुविधाओं की आशाएं न लगाएं, हो सकता है कि आप लोगों के लिए गद्दे भी सुलभ न हो पाएं, हो सकता है नंगी भूमि पर ही सोना पड़े, हो सकता है भोजन की अच्छी सुविधा भी न हो पाए, हो सकता है उपवासी भी रहना पड़े। भर्तृहरि जी के शब्दों में–क्वचिद् भूमौशय्या क्वचिचदपि च पर्यंक शयनम् क्वचिदपि शाल्योदन रूचि। क्वचिद कंथाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बर धर। मनस्वीकार्यार्थी गणयति सुखं न च दुःखम्। अतः इस बात की परवाह किए बिना यज्ञ को लक्ष्य बनाकर आएं। निष्ठा से, श्रद्धा से, तन्मयता से यज्ञ करने के लिए आएं। प्राणीमात्र के कल्याण के लिए, अपने कल्याण के लिए इस यज्ञ में भाग लेने के लिए आएं। पूज्य स्वामी जी के प्रयासों को आगे भी जारी रखने के लिए आएं। इस महान् यज्ञ में शामिल होकर महान् पुण्य के भागी बन इसमें श्रद्धा से आहुतियाँ समर्पित कर जहाँ अपने महान् सुख–सौभाग्यों को जगाने का उपक्रम करोगे, वहीं पूज्य स्वामी जी महाराज को अपनी श्रद्धा व समर्पण से तृप्त करोगे। देवों व पितरों के आशीर्वाद के भागीदार बनोगे। और अपने प्रिय व लाडले ऋषि कुमार के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करोगे। ऋषि कुमार ही क्यों और भी हमारे प्रियजन जो इस समय हमारे बीच नहीं रहे उनके प्रति भी श्रद्धासुमन अर्पित करोगे। यज्ञ महान् कर्म है, इसमें हर प्रकार से लाभ ही लाभ है। सब ओर से कल्याण ही कल्याण है। अतः अवसर को चूके नहीं। ऋग्वेद में निर्दिष्ट, महान् याजक पूज्य स्वामी जी द्वारा आरम्भित, इस महान् यज्ञ में अवश्य भाग लें। हर अवस्था में भाग लें, यदि परिस्थितिवश भाग न ले सकें तो अपना भाग इसमें अवश्य डालें। इससे पीछे न हटें। सौभाग्य आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है, उसे वापस न जाने दें।

ऋग्वेद में निर्दिष्ट यज्ञ में कुछ परिवर्तन :–प्रियजनों पूज्य स्वामी जी महाराज के पास मैं व मेरा बेटा था। जिसके परिणामस्वरूप वे एक स्थायी यज्ञमान के लिए प्रतिज्ञावद्ध होते थे। पर इस बार स्थिति अलग है, बेटा रहा नहीं। स्वामी जी बिस्तर पर पड़े हैं। मैं हूँ एकाकी। मेरा पहले भी मानना था कि दीर्घकालिक यज्ञों में, लम्बे समय के यज्ञों में स्थायी बैठने वाले यज्ञमान मिल जाते हैं तो ठीक, नहीं तो अशंकालिक यज्ञमानों को भी स्थान दिया जाना चाहिए। ध्येय यज्ञ होना चाहिए, यह की पूर्णता, यज्ञ की सफलता ध्येय होना चाहिए। यज्ञ में विघ्न बाधा उपस्थित न हो, उसकी नैर्यन्तरता चलती रहे यह ध्येय होना चाहिए और वह जिस रूप में भी पूर्ण हो वह उपक्रम श्रेयस्कर है। युद्ध का बिगुल बज जाता है। सेनाएं एक दूसरे से टकराने लगती हैं। युद्ध में विजय पाना ही सबका ध्येय होता है। इसके लिए अग्रिम मोर्चों पर लड़ रही सेनाओं को विश्राम के लिए पीछे बुलाया जाता है। उनके स्थान पर दूसरे सैनिकों को मोर्चे पर भेजा जाता है, जो तरोताजा होते हैं, जो दुगुने साहस से लड़ सकते हैं। युद्ध चलता रहता है वह रूकता नहीं। योद्धाओं में अदला–बदली होती रहती है, ऐसे ही दीर्घकालिक यज्ञों में भी होना चाहिए यह मेरी धारणा है। उसी रूप में इस बार इस यज्ञ को करने का प्रयास करूंगा। यज्ञमान बनने के इच्छुक व्यक्ति पूर्व ही अपना नाम प्रेषित कर दें। यज्ञमान सपत्निक हो तो अत्युत्तम। अभाव में एकांगी को भी अवसर दिया जाएगा। जीवन रूपी यज्ञ जब एकांगी होने पर भी चल सकता है। शास्त्र उसे जीने का अधिकार देते हैं। तो प्रतीक रूप इस यज्ञ में भी एकांगी यज्ञमान भी बैठने का अधिकारी होना चाहिए। जैसे जीवन जीने का उसे अधिकार है, वैसे ही यज्ञ करने का भी उसे अधिकार होना चाहिए। यह अधिकार उससे छीना नहीं जाना चाहिए।

यज्ञ का दिन व समय :–

प्रियजनों–वार्षिकोत्सव का यज्ञ १० अक्तूबर २०१५ को साढ़े छः बजे प्रारम्भ हो जाएगा। जोकि साढ़े नौ बजे तक चलेगा। सांयकाल–चार बजे से सात बजे तक चलेगा। १२ अक्तूबर २०१५ को सांयकाल–वार्षिक यज्ञ की पूर्णाहुति हो जाएगी।

१३ अक्तूबर २०१५ को प्रथम नवरात्रे को प्रातः साढ़े छः बजे से ऋग्वेद में वर्णित पूज्य स्वामी जी द्वारा व्यवहार में परिणत, समाज में बहुचर्चित दुर्लभ शारद यज्ञ आरम्भ हो

जाएगा। जिसका सफर ब्रह्ममुहूर्त में उषाकाल छः बजे से आरम्भ होकर मध्याहन् सांय, रात्रि के चारों पहरों में अनवरत गुजरता हुआ १४ अक्तूबर २०१५ को ब्रह्ममुहूर्त उषाकाल प्रथम सूर्योदय का साक्षात्कार कर नौ बजे पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न होगा।

सहयोग के इच्छुक व्यक्ति निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं :

१. पूर्णकालिक यज्ञमान पांच पीपे घृत द्वारा सहयोग
२. अंशकालिक यज्ञमान १ पीपा घृत द्वारा सहयोग
३. ढाई क्विंटल सामग्री रूपये २००/– के हिसाब से रू. ५०,०००/–
४. समिधाएं २५ क्विंटल X ६०००/– = रू. १५,०००/–
५. दक्षिणाएं रू. १,००,०००/–
६. भोजन, नाश्ता आदि पर रू. ८०,०००/–
७. सज्जा, टैंट आदि पर रू. ३०,०००/–
८. कर्मकारों को रू. २०,०००/–
कुल खर्चा रू. ३,७०,०००/–

शारद यज्ञ

पूज्य स्वामी जी महाराज का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। पत्राचार तो दूर, दूरभाष से बात करने में भी असमर्थ हैं। उनके द्वारा संचालित मठ की गतिविधियाँ चलाए रखने की जिम्मेवारी अब पूर्ण रूप से मेरे ऊपर आ पड़ी है। मैं अकिंचन हूँ। सामर्थ्यहीन हूँ। हाँ आप लोगों का भरपूर साथ रहा तो परमसामर्थ्यशाली भी हूँ। आप लोगों के सहयोग के बिना अधूरा हूँ। मठ धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बना रहे। यहाँ पर पूज्य स्वामी जी के द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्य उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हों। मठ की ख्याति आर्य जगत् में ही नहीं समस्त मानव समाज में फैले। मठ आर्यों का तीर्थ बनें। पूज्य स्वामी जी के इस स्वरूप को साकार रूप में परिणत करना आप सभी के सहयोग के बिना सम्भव नहीं। अतः आप लोगों का सहयोग हर पल, हर क्षण, हर घड़ी अपेक्षित है। एक प्रपत्र शारद यज्ञ से सम्बन्धित भेज रहा हूँ। अपनी पत्रिका में इसे स्थान देने की कृपा करें। एक साथ सम्पूर्ण रूप से न सही–क्रमशःपूर्वक दो या तीन बार इसे छापने की कृपा करें। मैं चाहता हूँ कि देश विदेश के सभी आर्यजनों को इसका संदेश प्राप्त हो, और अधिकारिक रूप से लोग इसमें भाग लें। पत्रिका का एक संस्करण का खर्चा कितना आता है, यह भी सूचित करने की कृपा करना। यज्ञोपरान्त एक संस्करण मठ सम्बन्धित हम प्रकाशित करना चाहेंगें। जिसके लिए आपके लेख भी अभी से आमन्त्रित कर रहा हूँ।

–आचार्य महावीर सिंह

ओ३म्-अध्यात्मिक जगत् का पवित्रतम् शब्द

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि. प्र.)

ओ३म् शब्द तीन अक्षरों एवं दो मात्राओं से मिलकर बना है। पहला अक्षर कण्ठ से निकलता 'अ' है। दूसरा 'उ' हृदय को प्रभावित करता है। तीसरा अक्षर 'म्' नाभि में कम्पन करता है। इस शब्द की ध्वनि नस नाड़ियों को प्रभावित करती है। इस शब्द की ध्वनि कंपन से नाड़ियाँ शुद्ध होती हैं तथा आभा मण्डल विस्तृत होता है। शरीर की रोग अवरोधक क्षमता बढ़ाता है। मानव उर्जा से भर जाता है। मन चित निर्मल हो जाता है। सब मन्त्रों का आरम्भ भी ओ३म् से ही होता है। स्वामी दयानन्द ने इसे परमात्मा का सबसे प्रिय नाम बताया है। योग साधना में इस ध्वनि का विशेष महत्व है। घूरन गति से ब्रह्माण्ड में पिण्ड घूम रहे हैं। उनके घूमने से एक ध्वनि निरन्तर निकल रही है। जैसे किसी तकली के घूमने से ध्वनि निकलती है। ऋषियों ने इसे ब्रह्मनाद कहा है। यह ध्वनि कोई अन्य नहीं, ओ३म् ही है। यह ध्वनि शरीर पर विशेष प्रभाव छोड़ती है। इसे बीज मन्त्र भी कहा गया है। बीज मंत्रों का शाब्दिक अर्थ न होते हुए भी वे प्रभावी होते हैं। इसे ही अनाहत ध्वनि कहा गया है। यही ब्रह्मनाद है। कहते हैं कि मौन और ध्यान से ब्रह्मनाद को सुना जा सकता है। जब यह ध्वनि सुनाई देने लगे तो उस व्यक्ति का परमशक्ति से जुड़ाव हो जाता है।

ओ३म् को एक अक्षरी मंत्र भी कहा गया है। तंत्र विद्या में एक अक्षरी मंत्रों का विशेष महत्व होता है। शरीर को स्थिर रखने के लिये इनका विशेष महत्व है। यह ध्वनि ग्रंथियों के स्राव को नियन्त्रित करती है। प्राणायाम तथा कई विशेष आसन करते समय ओ३म् का उच्चारण किया जाता है। ओ३म् का जाप किसी भी मुद्रा में किया जा सकता। साधक यदि बैठ नहीं सकता हो तो लेट कर भी कर सकता है। ओ३म् का उच्चारण तीव्र या मन्द स्वर में किया जा सकता है। परन्तु उच्चारण लय से किया जाये तो और भी लाभप्रद होगा। यह जाप किसी भी परिवेश में सुविधा अनुसार किया जा सकता है। यह उच्चारण हमें परमशक्ति से जोड़ता है और जीवन के परमलक्ष्य की ओर बढ़ाता है। इसके जाप से शरीर का तनाव दूर होता है और शान्ति और स्फुर्ति का अनुभव होता है। इसके जाप से जीवन के जीने और संसार की चुनौतियों का सामना करने का साहस मिलता है। इसके जाप से अपने को पहचानने में प्रेरणा मिलती है। प्रभु के प्रति आस्था बढ़ती है। हर स्थिति में शान्तमय जीवन जीने में आनन्द की अनुभूति होती है। अतः हमें ओ३म् का उच्चारण जब अवसर मिले करना चाहिये।

लौहपुरूष सरदार पटेल

♦कृष्ण मोहन गोयल, बाजार कोट, अमरोहा

'लौहपुरूष' एक ऐसा शब्द है जिससे प्रायः यह अवधारणा बनती है कि ऐसे व्यक्तित्व का व्यक्ति लोहे के समान कठोर होगा और सरदार पटेल दिखायी भी ऐसे ही देते थे। देखने में वे एक शुष्क–से और कठोर से व्यक्तित्व के लगते थे परन्तु भीतर से वे एक नारियल के समान थे जो ऊपर से एकदम कठोर होता है और अन्दर से बिल्कुल कोमल। देश को स्वतन्त्र कराने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। देश की स्वतन्त्रता के लिए ही बारदोली सत्याग्रह में उन्होंने अपने कुशल नेतृत्व में विशाल संख्या में लोगों को संगठित किया जिसके कारण उनको 'सरदार' नाम दिया गया जो उस समय की परिस्थितियों के दृष्टिगत एक बहुत ही मुश्किल काम था। परन्तु वे मजबूत इरादों पर दृढ़ रहे और अपने कार्य में सफलता पायी। अपने इन्हीं मजबूत इरादों के कारण ही वे 'लौहपुरुष' कहलाये।

सरदार पटेल पर छत्रपति शिवाजी तथा महर्षि दयानन्द जैसे महापुरूषों की अमिट छाप थी। वे इन महापुरूषों की अमिट छाप थी। वे इन महापुरूषों के विचारों से पूर्णतया प्रभावित थे। उनकी कार्य पद्धति की तुलना विश्व के महान् राजनीतिज्ञ जैसे ब्रिटेन के विंस्टन चर्चिल, अमरीका के आइजनहावर, रूस के खुश्चेव, चीन के चाऊ–एन–लाई से की जा सकती है।

उनके हृदय की कोमलता का श्रेष्ठतम उदाहरण खेड़ा के बाढ़ग्रस्त इलाकों में देखा गया जहाँ पर लोग चारों ओर से बाढ़ के पानी से घिरे हुए त्राहि–त्राहि कर रहे थे। वहाँ पर जाकर उन्होंने तन–मन–धन से निस्वार्थ भाव से बाढ़ पीड़ित लोगों की सेवा की। वहाँ पर उन्होंने शरणार्थियों के लिए कैम्प, भोजन, पानी आदि की व्यवस्था की और बड़ी कुशलता के साथ उनकी सहायता के लिए स्वयंसेवियों की एक बहुत बड़ी फौज बना दी।

सरदार वल्लभाई पटेल का जीवन बहुत ही सादगी भरा हुआ था। उनका बचपन गुजरात के नाडियाड में बीता। वे भलीभांति जानते थे कि गरीबी क्या होती है। वे अपने जीवन में अपने रहने के लिए एक मकान तक नहीं बना पाये। वे अहमदाबाद में एक किराये के मकान में रहा करते थे। संतान के रूप में उनके एक पुत्र दहया और पुत्री मणिबेन थी। वे अपनी विपरीत परिस्थितियों के कारण अपने जीवन काल में उनका विवाह तक नहीं करा पाये। उनकी सादगी का इससे उत्तम उदाहरण अन्य कोई और नहीं हो सकता कि जिस समय उनका देहावसान हुआ उनके बैंक खाते में मात्र दो सौ आठ रुपये थे।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। फिर लंदन जाकर इन्होंने बैरिस्टरी की पढ़ाई पूर्ण की। उसके पश्चात् अहमदाबाद में रहकर वकालत करने लगे।

इनके जीवन की घटना है कि एक बार सरदार पटेल अदालत में खड़े हुए किसी केस पर बहस कर रहे थे। तभी उनके किसी निकट सम्बंधी ने उनके पास आकर उनके कान में कुछ कहा और एक कागज हाथ में दे दिया। उन्होंने वह कागज खोलकर देखा, पल भर को तो वे ठिठके, फिर उसको मोड़कर अपनी जेब में रख लिया और फिर बहस में लग गये जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। दो घंटे की बहस के बाद उन्होंने मुकदमे को जीत लिया। उसके बाद उनकी आंखों से आंसू निकल आये। जब न्यायाधीश, वकीलों व अन्य लोगों ने उनसे इस विषय में पूछा तो उन्होंने उनको पत्नी के निधन के बारे में बताया। इस पर उनसे अपने मुकदमे को न छोड़ने का कारण पूछा गया तो वे बोले कि उस समय तो मैं अपना फर्ज निभा रहा था जिसका मेरे मुवक्किल ने शुल्क दे दिया था। मैं उसके साथ अन्याय कैसे कर सकता था ? ऐसे ही कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ निश्चयी पुरुष ही 'लौहपुरुष' बना करते हैं और ख्याति अर्जित करते हैं।

१६२० में उन्हें गुजरात कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष चुना गया और तब से वे १६४५ तक इसके अध्यक्ष रहे। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में उन्होंने लगभग तीन लाख लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की और इसके लिए उस समय लगभग डेढ़ करोड़ रुपये का चन्दा इक्टठा किया। यही काल था जब उन्होंने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और अपने पुत्र दहया तथा पुत्री मणिबेन सहित खादी को अपना लिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में वल्लभ भाई पटेल को गृहमंत्री पद सौंपा गया। उस समय देश में ५६५ देशी छोटी–बड़ी रियासतों का अलग–अलग प्रभुत्व था। जब भारतीय संविधान तैयार किया जा रहा था तो गृहमंत्री सरदार पटेल ने समस्त देशी छोटी–बड़ी रिसायतों के जमींदारों, राजा–महाराजाओं से भारत के संविधान के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करने को कहा तो अधिकांश जमीदारों, राजा–महाराजाओं ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व लेने का निर्णय लिया जो देश की अखण्डता के विपरीत था। हैदराबाद के निजाम ने स्पष्ट रूप

से कहा कि मैं अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करने के लिए स्वतंत्र हूँ। इस पर मंत्रिमण्डल में गहनता से विचार हुआ और सरदार पटेल की कूटनीति, विवेक और राजनैतिक कौशल के सम्मुख समस्त जमीदारों, राजा–महाराजाओं को झुकना पड़ा। निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही अवश्य करनी पड़ी। इसके लिए समस्त देशवासियों ने सरदार पटेल की भूरि–भूरि प्रंशसा की। देश की उत्तरी सीमा पर स्थित जम्मू–कश्मीर के लिए सरदार पटेल अपनी आखिरी सांसों तक जूझते रहे। सरदार पटेल के असामयिक अवसान के कारण यह निर्णय नहीं हो सका। इसके अतिरिक्त गृहमंत्री के नाते सरदार पटेल ने पाकिस्तान से आये हुए लाखों शरणार्थियों के पुनर्वास और भारत–पाक के अनेक विवादों का निपटारा भी बहुत ही सूझबूझ और साहस से किया।

सोमनाथ के मन्दिर के जीर्णोद्धार में भी उनकी प्रमुख भूमिका रही। सरदार पटेल के देहावसान पर नेहरू जी ने कहा था कि मेरा तो दाहिना हाथ ही टूट गया। सरदार पटेल वास्तव में कर्मयोगी पुरुष थे और गीता के सच्चे उपासक थे।

पिचहत्तर वर्ष की अवस्था में १५ दिसम्बर, १९५० को मुम्बई में उनका निधन हो गया। आज भी देश ऐसे महापुरुष को शत–शत नमन करता है।

योग भगाये रोग

उदर–रोग दे यों उड़ा ज्यों नग को बारूद।
उत्तम धोबी पेट का सर्दी का अमरूद्ध।।
चीकू कूची मारता योग भगाये रोग।
ब्रह्मचर्य की साधना जीते हर अभियोग।।
उठना ब्रह्ममुहूर्त में करना ऊषः पान।
अधि–व्याधि अभिशाप को हरे ब्रह्म वरदान।।
आँख बन्द कर देख लो भीतर का हर रंग।
मन की आँखें जब खुलें हो जाओगे दंग।।
भीतर अपना राज है बाहर जंगल राज।
सुन भीतर की बाँसुरी पहन ध्यान का ताज।।
अन्दर मन्दर सत्य का बाहर पग–पग झूठ।
भीतर घुसते सूरमा बाहर टूटी मूठ।।
कच्चे फल पकने लगे कृत्रिम विधि से रोज।
बच्चे पाप बन रहे बनें मृत्यु का भोज।।
सारा अमृत ओज का बचे कहाँ से ओज।
ब्रह्मचर्य बकवास है युग की सड़ियल खोज।।
छुप–छुप करते डॉक्टर सब पातंजल योग।
प्रकट विरोधी दीखते यह कैसा दुर्योग।।
हँसी एक वरदान है रोना है अभिशाप।
खुलकर हँसना पुण्य है घुटकर रोना पाप।।
फिसल जवानी जा रही कसकर पकड़ संभाल।
पहले क्रम पर स्वास्थ्य है पीछे आटा–दाल।।
मस्तक पर दस्तक हुई खुला सहस दल–द्वार।
ब्रह्मरन्ध्र रिसने लगा है आनन्द अपार।।
बना सके है योग ही भोगी को नीरोग।
कम खाओ ज्यादा जिओ चखो सुखद संयोग।।
पूरे श्रद्धा भाव से कर अनुलोम–विलोम।
ठुकरा दो बीमारियाँ पिओ स्वास्थ्य का सोम।।

–डा. सारस्वत मोहन, मनीषी

कूड़ा करकट हटाओ

साभार : आर्य जगत्

एक महात्मा थे। किसी घर में भिक्षा मांगने गये। घर की स्वामिनी देवी ने भिक्षा दी, हाथ जोड़कर बोली, "महात्मा कोई उपदेश दो!" महात्मा ने कहा, "आज नहीं कल दूंगा।" देवी ने कहा, "तो कल भिक्षा भी यहीं से लिजिए।" दूसरे दिन महात्मा भिक्षा लेने के लिए चलने लगे तो कमण्डल में कुछ गोबर भर लिया, कुछ कूड़ा कुछ करकट। कमण्डल को लेकर देवी के घर पहुंचे। देवी ने उस दिन बहुत अच्छी खीर बनाई थी उनके लिए। उसमें बादाम डाले थे, पिस्ता ड़ाला था। महात्मा ने आवाज़ दी, "ओ३म् तत्सत्।" देवी खीर का कटोरा लेकर बाहर आई। महात्मा ने अपना कमण्डल आगे कर दिया। देवी उसमें खीर डालने लगी तो देखा कि वहां गोबर और कूड़ा भरा पड़ा है। रूककर बोली, महाराज, यह कमण्डल तो गंदा है।" महात्मा ने कहा, "हां गंदा तो है, इसमें गोबर है, कूड़ा है, परन्तु अब करना क्या है ? खीर भी इसी में दे दो।" देवी ने कहा, "न महाराज! इसमें डालने से तो खराब हो जायेगी। मुझे दीजिए यह कमण्डल, मैं इसे शुद्ध कर लाती हूं।" महाराज बोले, "अच्छा मां! तब डालोगी खीर, जब कूडा करकट साफ हो जाये ?" देवी बोली, "हां।" महात्मा बोले, "यही मेरा उपदेश है, मन में जब चिन्ताओं का कूड़ा–करकट और बुरे संस्कार का गोबर भरा है, तब तक उपदेश के अमृत का लाभ नहीं होगा। उपदेश का अमृत प्राप्त करना है तो इससे पूर्व मन को शुद्ध करना चाहिए, चिन्ताओं को दूर कर देना चाहिए, बुरे संस्कारों को समाप्त कर देना चाहिए, तभी ईश्वर का नाम चमक सकता है, सुख और आनन्द की ज्योति जाग सकती है।

श्री गुलेरिया जी

श्री रामशरण गुलेरिया जी सच्चे पक्के व कर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। उन्होंने अत्यंत दक्षता से अध्यापन कार्य पूरा कराया। वे अपने वृद्ध माता के भक्त थे और उनकी रात–दिन सेवा करते थे। वे जीवनकाल में अपनी माता से कुछ भी इच्छा करने और पूरा करने मैं तत्पर रहते थे। माता की बड़ी आयु के कारण अचानक अस्वस्थ होने के कारण मास्टर अपने हाथों से माँ के कपड़े बदलते। उन्हें उनकी इच्छा अनुसार भोजन खिलाकर उन्हें सम्मानित करते थे। वे अक्सर कहते थे कि माँ अपने जीवनकाल में जो तुम कहोगी वह इच्छा पूरी करूंगा। लेकिन मृत्युपरान्त मैं केवल आर्य समाज के नियमों का पालन करते हुए तुम्हारे शरीर को विसर्जित कर दूंगा। वे अत्यंत कर्मनिष्ठ सतपुरूष थे। वे अपना कार्य ईमानदारी व दक्षता से करते थे। जब इन्होंने अपनी माता की मृत्युपरांत उनका पौराणिक रीति से कोई भी संस्कार नहीं किया तो स्थानीय जनता तिलमिला गई। उन्होंने सोचा कि गुलेरिया जी की माता भूत व प्रेत योनी में चली गई है। उनका उनके पुत्र ने मरणोपरांत कोई भी पौराणिक संस्कार नहीं किया। रामचन्द्र गुलेरिया भी अपनी धुन के सच्चे पक्के थे। बिना किसी सहारे प्रभु सहारे वे जीवन में आगे बढ़ते रहे। वे ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज के सिद्धांतों के कट्टर समर्थक थे। वे चाहते थे कि सुन्दरनगर आर्य समाज का अपना भवन बने। इसके लिए उन्होंने प्रयत्न किया। लेकिन आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण वे इस कार्य को अन्तिम रूप न दे सकें। श्री गुलेरिया बहुत ही ईमानदार, लग्नशील, कर्मठ व्यक्ति थे। वे सेवानिवृत्ति के उपरान्त एक बार मुझसे मिलने आए मैं उस समय सुन्दरनगर व. मा. पा. में कार्यरत था। मेरे बचपन के गुरू श्री हरि सिंह राणा उनकी बातें अक्सर कहा करते थे। जिनका मैं भरपूर समर्थन करता था। वे ऋषिवर दयानन्द की विचारधारा के प्रचार प्रसार के प्रबल समर्थक थे। हम कई बार भोजपुर पुराने बस स्टैंड तुलसी राम टेलर मास्टर के घर बैठकर आर्य समाज की गतिविधियों का चिन्तन करते थे। आर्य समाज के प्रचार प्रसार करना चाहते थे। लेकिन आर्थिक स्थिति मजबूत न होने के कारण वे अपनी गतिविधियों को कार्यरूप न दे सके। एक बार वे मुझे पुराने बस स्टैंड पर अपने घर की ओर जाते दिखे। मैंने उनसे पूछा–गुरू जी आप दृष्टिगोचर ही नहीं होते, क्या बात है। उन्होंने गंभीरता से कहा कि मैं अब दृष्टिगोचर हुंगा ही नही। मुझे उनकी यह बात कष्टदायक लगी। मैं उनको अपने स्कूटर पर बिठाकर झील के ले गया। जहाँ से उनका घर बहुत नजदीक था। मैंने उनसे किसी दिन बैठकर विचार विमर्श करने की इच्छा प्रकट की। लेकिन मुझे तनिक भी आभास न था कि गुलेरिया जी से यह मेरा आखिरी मिलन है और उसके उपरान्त मेरी उनसे मुलाकात शमशान भूमि में हुई, जब उनकी देह वहाँ पड़ी थी और पौराणिक रीति निती से संभवत उनकी पत्नी के इच्छानुसार यह कार्य किया गया। वह निधन से कई बार पूर्व गुलेरिया जी ने मुझसे कई बार यह कहा कि ऐसा भी हो सकता है कि जहाँ मैंने घरों के बाहर मटके तुड़वाए। मेरे जाने के बाद मेरे घर के बाहर ही मटका लटक जाए मेरी पत्नी अपनी ही विचारधारा की मालिक है, हुआ भी वही, जिसकी गुलेरिया जी शंका करते थे। उनके निधन के उपरान्त मैं एक बार भी उनके घर नहीं गया। वे मेरे प्रेरक, समाज सुधारक अनाथों के उद्धारक थे, उनका वैदिक रूप से आर्य समाज रीति से संस्कार न कराना मेरे लिए बहुत दुखद था। क्योंकि गुलेरिया जी को ही मैं अपना सबसे बड़ा पथप्रदर्शक मानता रहा हूँ।

बचपन में अपनी माता के कहने के मुताबिक परम आदरणीय रामशरण गुलेरिया जी के घर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उस समय मैं पांचवी कक्षा का विद्यार्थी था, मेरी माता जी ने मुझे आदेश दिया था कि मैं वहां जाऊं। गुलेरिया जी ने कापियों के लिए कागज जुटाने की कही थी। यह लगभग १९५६ की बात होगी। जैसे मैं उनके घर के आंगन में पहुँचा। वहाँ मैंने मास्टर जी को गुरू जी कहकर आवाज दी। सहसा मुझे ऊपरी मंजिल खिड़की से झांकता हुआ पीले रंग की पगड़ी पहने एक व्यक्ति दिखाई दिया। जो मास्टर रामशरण गुलेरिया जी ही थे। उन्हें देखते ही मैं रोमांचित हो उठा। मेरा हृदय बड़े जोर–जोर से धड़कने लगा। लेकिन जब मैंने गुलेरिया जी को माता जी द्वारा भेजने की बात कही, तो उन्होंने मुझे भीतर आने व बैठने को कहा। वे सफेद कागजों का एक बड़ा बंडल मेरे पास ले आए। और मुझे ले जाने को कहा। मैंने पूछा क्या गुरू जी ये सब मेरे लिए ही हैं। उन्होंने प्रत्युत्तर दिया कि जब भी कापियाँ खत्म हो जाए, जब ये समस्त खत्म हो जाए, मैं और कागज दूंगा। गलेरिया जी की इन बातों से मेरे दिल व दिमाग में ऊर्जा का संचार हुआ। मैं कापियों की गठरी उठाने ही वाला था, कि एक थाली में उनकी पत्नी ने तड़के रौंग खाने को दिए। मैंने प्रेम आनन्द से गुरू गृह में यथेष्ठ

भोजन किया। उसके उपरान्त कांगजों की गठरी लेकर खुशी से घर आ गया। इन कागजों ने मेरे जीवन कर दिया।

गुलेरिया जी मेरे जीवन के पथ प्रदर्शक थे, हैं व रहेंगे। आज खरीहड़ी आर्य समाज के भवन में उनका भरपूर आशीर्वाद रहा। उनके सुपुत्र कृष्ण चन्द गुलेरिया आर्य समाज हेतु माइक खरीदकर दिया। जो आज भी आर्य समाज में कार्य कर रहा है। एक बार मैंने अपने खेत में ले जाकर मास्टर से पूछा—कि ये जगह मैंने खरीद ली है। अब इस गोलाकार पत्थर का क्या जाए, जिसे सभी नरसिंह मानकर जानते व पहचाते हैं। उन्होंने दोनों हाथों को इकट्ठा करके मजबूती से गोलाकार पत्थर को उठाया। बड़ी तेजी से गोलाकार पत्थर को फैंक दिया। मेरे खेत में दो—चार दिन पड़ा रहा। उनके कहने पर मैंने एक दिन खाली बैग मैं उस पत्थर को डालकर सुखेदव वाटिका में फैंक दिया। अब प्रभु कृपा से सब काम ठीक चल रहा है। नरसिंह वाला खेत जो श्री मनीराम व हिमप्रभ जी का था, उन्होंने मुझे बेच दिया और ये हमारे ऊपर एक महान् वरदान सिद्ध हुआ। स्वर्गीय श्री वीरेन्द्र संचालक पंजाब वीर प्रताप के गुरू स्वामी श्री रामशरण जी महाराजा जो हरियाणा प्रतिनिधि सभा के उन दिनों सदस्य थे, वे मेरे घर ठहरे। उन्होंने मुझे समझाया कि नारसिंग का अर्थ है जैसे नरों में शेर—जैसे त्रेता में श्री राम, द्वापर में श्री कृष्ण, आधुनिक युग में महात्मा गांधी, इंदिरा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री नरसिंह थे। अर्थात् उन्होंने अपने समय में अपनी जनता का प्रदर्शन किया। ऐसी महान विभूतियों को हमारा बार—बार नमन।

आज संसार अध्यात्मवाद छोड़ भौतिकवाद से अधिक निकट आ चुका है। आज विश्व में एक कोने से दूसरे कोने तक मानव अन्याय, अंधकार व अत्याचार का सामना कर रहा है। आज विश्व में दीन दुखियों, दरिद्र, दलितों के आंसुओं को पोंछने की आवश्यकता है। यह मंत्र हमारी ऋषिवर दयानन्द, महात्मानन्द, नेहरू व फकीर आदि ने अपने जीवन काल जन—जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। आज विश्व बंधुत्व की भावना द्वारा हम उच्चतर शिखर तक पहुँच सकते है। इस विश्व को लाभकारी बना सकते है। आज का मानव बारूद के ढ़ेर पर बैठा है। कभी भी कोई भी गलती उसके अरमानों के बसन्त को पतझड़ में बदल सकती है। विश्व में आज हमें विश्व बंधुत्व की भावना को लेकर चलना होगा। तभी और केवल तभी जीवन जीने योग्य बन सकता है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया" का स्वपन हमारे ऋषि मुनियों का रहा है। वे आर्य विचारों का प्रचार प्रसार करके विश्व को एक सूत्र में बांधना चाहते थे। आर्य समाज के प्रवर्तक, वेदों के उद्धारक, समाज सुधारक ऋषि दयानन्द, वदों की रक्षा के पहले संरक्षक थे। उन्होंने लौटो वेदों की ओर का नारा दिया। वे चाहते थे जानते, मानते थे कि विश्व बंधुत्व की भावना वेदों के द्वारा ही फलीभूत हो सकती है। ईसाई, पारसी व पादरी अभी तक वेदों, के रक्षक रहे हैं। आज जीवन में वेदों की शिक्षा पर चलने की नितान्त आवश्यकता है।

वेद मानव मात्र की धरोहर है। जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी का अखण्ड व अनन्त विश्वास रहा। कालान्तर में जाकर स्वार्थी दम्भी, छली तत्वों द्वारा अपनी—अपनी डफली बजाकर अपना राग अलापना शुरू कर दिया। यह राष्ट्र के लिए अत्यन्त खेद की स्थिति रही। वेद का हर मंत्र मीठी रोटी की तरह है। जिसे जहाँ से भी चखकर देखें हमारे मुख में मिठास आएगी ही। वेद के मंत्रों को कुछ अज्ञानी, अधपढ़ पण्डितों द्वारा तोड़ मरोड़कर उसमें अपने स्वार्थ का नमक मिर्च जोड़कर अपने ही ढंग से अर्थ का अनर्थ कर डाला, जब वेदों के महान व्याख्याकार, समाज सुधारक ऋषिवर दयानंद से लोगों ने प्रश्न किया कि स्वामी जी क्या यह ठीक नहीं कि अपने वेदों का अर्थ उल्ट दिया। हाँ, मैंने उल्टे अर्थों को उल्ट दिया अर्थात् उनको सुल्टा (सीधा) कर दिया। मेरा अभिप्राय जैसे को तैसा कहना है। उल्ट पुल्ट बातें कहना मेरा काम नहीं। ऋषिवर दयानन्द देश में ही नहीं अपितु विश्व में वेदों का प्रचार प्रसार करना चाहते थे। क्योंकि वेद ही मानव मात्र की प्रेरणा निधि रही है। जिस पर प्राणि मात्र को गर्व करना चाहिए। आज मानव यत्र तत्र शांति के लिए भटक रहा है। लेकिन उसकी प्यास केवल व केवल मात्र वैदिक ज्ञान की पिपासा के दो घूंट पीने से ही बुझ सकती है। हम मानव हैं, मानव बनकर ही पृथ्वी में विचरण करें। एक दूसरे के साथ सहयोग व सद्भावना का बर्ताव करें ताकि विश्व शांति की जा सके। अन्धकार में भटकते प्राणि चैन की सांस ले सकें। आज मानव को मानव से ही अधिक खतरा व संशय बना है। न मालूम कब गले की माला ही सांप बनकर हमारी जीवन लीला को समाप्त कर दे। अतः लघु जीवन लेकर हम आए हैं। लघुता में प्रभुता को प्राप्त करें। प्रभु की वेदवाणी का प्रचार प्रसार यत्र तत्र सर्वत्र करें। यही हमारी ऋषि मुनियों व विशेषकर आर्यसमाज के यशस्वी विद्वान् ऋषि दयानन्द का चिन्तन मनन रहा हैं। वे मानव मात्र को

मनुष्यों के सर्वांगीण विकास के लिए लौटा वेदों की ओर का उद्घोष अपने जीवन काल में करते रहें। जिसे हमने अपने मन में ठीक प्रकार से समझ व बिठा लिया तो यह देश पहले की तरह विश्व गुरू बनेगा। जो ताप व संताप धोने की सामर्थ्य रखता है। हमें अपने पूर्वजों पर हमेशा गर्व रहा है। उन आर्यों के लिए श्री मैथलीशरण जी यही कहते है :-

और ईश्वर चलने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए। वे आर्य ही थे जो अपने लिए न जीते थे वे स्वार्थ व अपने लिए मोह की मदिरा पीते न थे।

अपने लिए दूसरों का हित कभी हरते न थे।
चिन्ता परीपूर्ण व अशांतिपूर्ण वे कभी मरते न थे।

श्री गुप्त जी उनके जीवन को धन्य व सफल मानते हुए यह कहते हैं :

उनके आलौकिक दर्शनों से दूर होता ताप था,
अति पुण्य मिलता था तथा मिटता ह्रदय का ताप था,
उपदेश उनके शान्तिकारक थे निवारक शोक के।
सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैषी लोक के।

किसी महान् विभूति ने ठीक ही लिखा है :

कुछ लोग अपने दुःखों का राग गाते हैं,
दीपावली हो या होली हो सदा मातम मनाते हैं।
मगर दुनिया झूमती उनकी ही रागिनी में,
जो जलती चिता में बैठकर सदा रागिनी सुनाते हैं।

धर्म की रक्षा करने वाले ऋषि मुनि, पीर-फकीर, साधु-मुनि भद्रजन गुरूजनों ने हमें शांति सहिष्णुता के मार्ग पर चलने का पाठ पढ़ाया है। उनके शब्दों में मानव जीवन की सफलता दीन-दुखियों पीड़ितों के आंसुओं को सदा पोंछने में रही है, यही सबसे बड़ा धर्म कर्म है।

हमारे पूर्वज सदा ही सभी के हितैषी, मार्गदर्शक, पथपदर्शक रहे है। उन्होंने समाज में स्वस्थ परम्परा स्थापित कर वायुमण्डल को चुस्त दुरूस्त करके मानव को स्वस्थ जीवन जीने की घुटी का पान कराया। उनके उपदेशों की अमृत वर्षा से समाज में शांति व मन मस्तिष्क में शांति होती थी। वे मन मस्तिष्क से कभी किसी का अहित नहीं करते थे। परोपकार करना उनके जीवन का मूल था। सर्वे भवन्तु सुखिनः का अमृत उनके पूर्वजों ने पिला दिया थी तभी उनका जीवन शान्त, सुरम्य रहा। वे कुशल चिकित्सक की तरह समाज में फैले असाध्य कीटाणुओं का नाश करने में तत्पर रहते थे। वे कभी किसी भी परिस्थिति में किसी का अहित चिन्तन नहीं करते थे। उनका जीवन तप, त्याग की मूर्ति था। वे पुण्य का कार्य करने में जीवन की सार्थकता समझते थे। वे अथाह पीड़ा व वेदना में भी दिल दिमाग में शांति संजोए रखते थे। वे भू-मण्डल पर नेकी की खेती किया करते थे। वे दीन-दुखियों का पोषण करते थे। उनका शोषण करना महान् पाप समझते थे। वेदों के महान् योद्धा जननायक तथा महान समाज सुधारक श्री दयानन्द सरस्वती को जब शमशान भूमि में अंतिम संस्कार हेतु ले जाया जा रहा था तो ओ३म् तथा गायत्री मंत्र की स्वरलहरी पालकी के साथ चल रहे सभी व्यक्तियों के मुख से निकल रही थी। ऋषिवर ने जन-जन तक वेदों की पावन लहरी को चारों दिशाओं में प्रचार प्रसार किया। वे जननायक थे। उनके चले जाने से समाज में आई कुरीतियों अनितियों का विरोध स्वामी जी के द्वारा स्थापित आर्य समाज जगह-जगह कर रहा है। आज यदि समाज सुगन्धि बनाना है तो ऋषि मुनियों का रास्ता अपनाना होगा। तभी जीवन सुरम्य, सुगन्धित होगा।

वृद्धावस्था में जीवन का पतझड़ और अन्तिम पड़ाव होता है। इसमें व्यक्ति को सोच समझकर कदम आगे-आगे बढ़ाना चाहिए। अपने जीवन का पथप्रदर्शक स्वयं बनना चाहिए। जीवन में फूल-कांटे, छाया-धूप, सुख-दुःख आते जाते रहते हैं, जो व्यक्ति चिन्ता मुक्त होकर इनसे दो-दो हाथ करता है उसका जीवन सुसाध्य, सुरम्य है। हमें सारहीन, तथ्यहीन बातें करके बतंगड़ नहीं बनाना चाहिए। अपितु कठिन से कठिन, गंभीर से गंभीर, असुखद से सुखद चिन्तन मनन करके उनका समाधान निकालना चाहिए। पूर्वजों की अवहेलना समाज में किसी भी ढंग से उचित नहीं। जीवन में पूर्वजों को भी अपने जीवन काल में अर्जित सुख-दुःख की अनुभूति को समाज में बांटना चाहिए। दुखी जीवन को आलोकित करना चाहिए। कवि ने ठीक ही कहा है :-

जीवन पूर्ण लिए हुए आता कभी जाता कभी
आशा निराशा में घिरा हंसता कभी रोता कभी
गति रति न हो इसका ध्यान
आठों याम है चलना हमारा काम है।

हमें चरैवैति-चरैवैति के वाक्य पर अमल करना चाहिए। जिसका केवल मात्र अर्थ यही है कि हम जीवन में चलते रहे रूकें नही। तो ही कवि की वाणी सार्थक हो सकती है। चलता रहे अविरूद्ध इसका ध्यान। आठों याम है। चलना हमारा काम है। जीवन के अंतिम पड़ाव पर बुढ़ापा अंगड़ाई लेता हैं, बहुत सोच समझकर कवि ने तरूणाई से पूछा तुम कहाँ चली गई हो। कवि कहते हैं :

ऊंचे–ऊंचे पर्वत लांघे नीचे नदिया गाई
अब दस उंगल ऊंचा नीचा देख बुद्धि चकराई
अब अरे बता दे कोई कहाँ गई तरूणाई।
गई–गई बस वह कभी न लौट के आई
अरे बता दे कोई कहां गई तरूणाई
ऐसी स्थिति वृद्धावस्था में आती है
आंख न देखे कान न सुने टांग चले लंगड़ाई
तन में रोग समूह समाया मन में भूल समाई
अरे ये बता दे कहाँ गई तरूणाई।

वृद्धावस्था एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें मनुष्य ने सुख–दुःख का पान किया होता है। वह समाप्ति के चरम बिंदु पर पहुंचने पर जीवन को सुखी बनाने व मानवता को सुखी बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

वह कर्त्तव्यपथ पर अग्रशील रहता है। इसके सुस्वाद सुख–दुख भोगने को निरन्त चलता रहता है। हमारा जीवन ईश्वर का दिया अनुपम धन है। इसकी रक्षा करना हमारा धर्म–कर्म व जीवन का मर्म है। हमें प्रत्येक दिन को सुदिन मानकर उसमें अनेक व नाना सुखों को समेटने का प्रयत्न करना चाहिए। दुःखों को समूल नाश करते रहना चाहिए। हमें प्रातः आंखे खोलने के साथ और रात्रि निद्रा देवी की गोद में जाने से पूर्व तक सुकर्मों की खेती करते रहना चाहिए। अपने जीवन से संतुष्ट होकर उस महान शक्ति का हमें जीवन देने के लिए धन्यावाद करते रहना चाहिए। ईश्वर की शीतल छाया में बैठकर सर्वदा उसकी आभा को निहारते रहना चाहिए। अपने जीवन को सुखयुक्त व दुखमुक्त बनाते रहना चाहिए। यहीं मानव जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है व यही सत्य भी है।

—सम्पादक

श्रद्धांजलि

श्री दीनानाथ परमार जो नौलखा निवासी हैं, को गत दिनों अपनी पत्नी का दुखद वियोग सहना पड़ा। श्री परमार की पत्नी संसार को छोड़े दो मास ही हुए हैं। वह सुप्रसिद्ध भूतपूर्व सांसद श्री गंगा सिंह की छोटी बहन थी। वह अपनी ईमानदारी, नेकी, मिलनसारी के लिए सबमें प्रसिद्ध थी। कुछ साल पूर्व वे सड़क पर अपनी ही दिशा में बाईं ओर जा रही थी। सहसा एक ट्राली का पहिया ट्राली से छूट गया और आगे चल रही श्री परमार की पत्नी से टकरा गया। वह अचेत होकर गिर गई। लंबे समय तक उनका उपचार होता रहा। लम्बे समय तक संघर्षों से दो–दो हाथ करने पड़े उनके चले जाने से परमार जी के गृह मैं जो विपदा आई है उसे निकट भविष्य में पाटना कठिन ही नही असंभव है वह तप व त्याग की मूर्ति थी। वह सदा सबका भला चाहती थी हंसमुख थी। जहाँ तक संभव होता वे दूसरों की सहायता करने में पीछे नहीं हटती थी। उनके चले जाने से वातावरण में सुनता आई है। प्रभु उनको अपनी व्यवस्था में शांति प्रदान करे। अपना कल्याणमय हाथ सदा जहाँ वह महिला पैदा हुई है उन पर बनाए रखे। वह जीव प्रभु छाया में पल्लवित, पुष्पित होता रहे। वह अगले जीवन में नेक, कुलीन परिवार में जन्मे। वह सौ वर्षो की सुकर्मों की खेती करते हुए आनन्द को प्राप्त करती रहे। करूणाा की इस मूर्ति के चले जाने से आर्यवन्दना परिवार सद्गति व शांति की प्रार्थना करता है। इस महान क्षति से आपत्तिग्रस्त समस्त परिवार को इस दुःख को सहने की सामर्थ्य व शक्ति प्रदान करे। इस परिवार पर शांति व समृद्धि की वर्षा करे। यही हमारी प्रभु चरणों में प्रार्थना है।

—सम्पादक

गुणवान कम मिलते हैं

भीड़ बहुत है दुनियाँ में, पर इंसान कम मिलते हैं।
शक्ल पहनावे से सुन्दर, पर गुणवान कम मिलते हैं।।
लुटाते हैं, नाच गानों में, लोग धन को खूब,
पर गऊशाला के नाम पर, दान कम मिलते हैं।
खुश होते हैं लोग, सुनके गीत बेढंगे,
जो वेद मन्त्र सुने, ऐसे कान कम मिलते हैं।
हो रही है हीरे मोतियाँ की बरसात वेदों में,
लेकिन चुनने वाले, कदर दान कम मिलते हैं।
'आलोक' इन पथों से, गुजरे कितने ही महापुरूष,
लेकिन दयानन्द के जैसे, उज्ज्वल निशान कम मिलते हैं।

—दाताराम आर्य 'आलोक',
अलवर, राजस्थान

परमात्मा को कैसे देखते हैं ?

•कृपाल सिंह वर्मा, शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ (उ. प्र.)

संसार में अनेक वस्तुएं निराकार हैं जिन्हें हम प्रतिदिन देखते हैं। वे हैं भूख, प्यास एवं दुख। इनको मन की आंखों से ही देखते हैं, तन की आंखों से नहीं। इसी प्रकार ज्ञानस्वरूप, आनन्दस्वरूप, शक्तिस्वरूप परमात्मा को भी मन की आंखो से ही देखा जाता है। यदि हम एकाग्र मन चित से परमात्मा का ध्यान करें तो हृदय में ज्ञान, आनन्द तथा शक्ति का संचार होने लगता है। जब हम परमात्मा की उपासना करते हैं तो मन आनन्दस्वरूप तथा प्रकृति की उपासना करते हैं तो मन सुख–दुखस्वरूप हो जाता है।

वार्षिक उत्सव, २०१५

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

आर्य समाज कुल्लू का वार्षिक उत्सव प्रतिवर्ष की भान्ति १२ जून से १४ जून तक मनाया गया। कार्यक्रम ७.३० प्रातः से आरम्भ हो जाता था तथा १० बजे प्रातः तक चलता रहता। फिर २ बजे से ४ बजे तक विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं जन साधारण के लिये कार्यक्रम होता। प्रातः कालीन सभा में यज्ञ, हवन, भजन एवं उपदेश होता रहा। अपराह्न के कार्यक्रम में भजनोंपदेश एवं प्रवचन होता। इस अवसर पर पूज्यपाद स्वामी सदानन्द जी महाराज, अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) विशेष रूप से अपने मठ के कर्मनिष्ठ कार्यकर्ताओं संग पधारे थे। स्वामी जी उच्च कोटि के विद्वान् हैं तथा अच्छे योग्य वैद्य भी हैं। यह उपदेशक भूमिका निभाते रहे तथा १०.३० बजे प्रातः से दोपहर १२.३० बजे तक निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं रोगोपचार करते रहे। यज्ञ के ब्रह्मा का दायित्व श्री रामफल सिंह जी महामन्त्री आर्य प्रति निधि सभा (हि.प्र.) तथा प्रधान आर्य समाज सुन्दरनगर (कालौनी) ने निभाया। इसके अतिरिक्त दूसरे उपदेशक का कार्य भी सफलता से निभाया। भजनोपदेशक के कार्य को गुरूकुल झज्जर (हरियाणा) के ब्रह्मचारी श्री ध्रुव ने बड़े उत्साह एवं निष्ठा से निभाया। इसके साथ इसी की चार बहिनें आरती, सुमेधा, मेधा एवं एक अन्य भी आई हुईं थी। जिन्होंने ने अपने मधुर कण्ठ से भजन सुना सभी को मन्त्र मुग्ध किया। इनके संगीत को और रोचक दिल्ली के ढोलक वादक ने बनाया। ये सभी उभरते हुए भजनोपदेशक हैं जो निकट भविष्य में आर्य समाज के लिये एक निधि सिद्ध होंगे। रविवार १४ जून को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तथा कार्यक्रम निरन्तर १ बजे सायं तक चलता रहा। १ बजे अपराहन् को ऋषि लंगर आरम्भ हुआ जिसमें दो हजार के लगभग श्रद्धालु सम्मिलित हुए तथा प्रशाद ग्रहण किया। लंगर को सफल बनाने के लिये विद्यालय के विद्यार्थियों एवं आर्य समाज के पुरोहित श्री भवानी सिंह नेगी ने विशेष योगदान दिया। आर्य समाज के सदस्यों में बड़ा सुन्दर तालमेल देखने को मिला और सभी ने दिल खोलकर सहयोग दिया। उत्सव के सफल आयोजन के लिये सभी की भूमिका सराहनीय रही।

असली और नकली ईश्वर

♦अश्विनी कुमार पाठक, नानक पुरा, नई दिल्ली–२१

भारत के लोग नकली माल बनाने में बड़े होशियार हैं नकली करेन्सी नोट, दूध, घी, खोया और नकली दवाईयाँ भी खूब बन रही हैं जिनसे लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ किया जा रहा है। ऐसे लोगों को आजीवन कारावास की सजा का कानून बनना चाहिये। तभी नकली पदार्थ बनाने को रोका जा सकता है। इसी प्रकार ईश्वर भी नकली बना दिये गये हैं।

चार वेद सबसे पुराने ग्रंथ हैं जिन्हें ईश्वरीय ज्ञान माना जाता है क्योंकि मनुष्यों में स्वाभाविक ज्ञान नहीं होता। इसलिए परमात्मा को आदि गुरु माना जाता है। वेद में कहा गया है 'सः गुरूणामपि गुरू'। यजुर्वेद ३२.३ में स्पष्ट कहा गया है 'न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्य नाम महद्यशः' अर्थात् उस परमात्मा की कोई मूर्ति नहीं है। चारों वेदों में एक भी मन्त्र ऐसा नहीं है जिसमें उसकी किसी प्रकार की मूर्ति बनाकर पूजा करने को कहा गया हो। इसी विषय पर काशी शास्त्रार्थ में महर्षि दयानन्द को वहाँ का कोई भी पण्डित वेदों में से मूर्ति पूजा का कोई भी पण्डित वेदों में से मूर्ति पूजा का कोई मन्त्र दिखा नहीं सका।

केवल चार वेद ही मिलावट से बचे हैं क्योंकि श्लोकों की बजाये यह मंत्रों में हैं। अन्य लगभग सभी ग्रंथों में वेद विरुद्ध बातें मिला दी गई हैं क्योंकि उस समय प्रिंटिंग प्रैस इत्यादि नहीं थे और हाथ से ही किताबें लिखी जाती थीं। हनुमान चार वेद पढ़े वानर जाति से थे परन्तु उन्हें बन्दर बना दिया गया। वेदों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश दुर्गा, सरस्वती इत्यादि ईश्वर के कई नाम आये हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर के १०० नामों का वर्णन किया है जिसमें मुख्य नाम ओ३म् लिखा है। पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश शिव, दुर्गा, काली इत्यादि के इतिहास का भी वर्णन है जो पहले कभी हुए होंगे परन्तु अब कहीं नजर नहीं आते। इनकी अजीब ढंग की मूर्तियाँ तथा चित्र बनाये जाते हैं जो सृष्टि नियम के अनुसार नहीं है। इसलिये यह काल्पनिक ही लगते हैं। आजकल कई लोग अपने आप को ईश्वर कहते हैं परन्तु ईश्वर का मुख्य कार्य सृष्टि की रचना करना, पालन करना तथा संहार करना है जो इनके बस की बात नहीं इसलिये यह सब नकली हैं।

आर्य समाज को किसी से डरना नहीं चाहिये और इन नकली ईश्वरों की पोल खोलनी चाहिये। ईश्वर तो एक ही है उस जैसा महान् पुरुष कोई नहीं है। श्रीराम, श्रीकृष्ण हमारे महापुरूष थे जो स्वयं ईश्वर भक्ति करते थे।

हम अपने शंहशाह

•सुकामा आर्या

अपना जीवन जीते हुए हमारे मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं, तमन्नाएं रहती हैं। हम अपने भावी जीवन के लिए उत्साहित रहते हैं, बड़े सपने संजोए रखते हैं। कुछ सपने तो आसानी से साकार हो जाते हैं और कुछेक अथक प्रसायों के बावजूद सत्य सिद्ध होने से कोसों दूर रहते हैं।

पहले तो हम बैठकर यह विश्लेषण करें–कि हमने क्या खोया क्या पाया ? यह जीवन भर का, कुछ वर्षों का, कुछ महीनों का भी कर सकते हैं। अगर हानि अधिक हुई है, असफलताएं अधिक आई हैं तो थोड़ी ज्यादा गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

अब हमें पकड़ना है कि हम चूकते कहां पर है ? हमारे कमजोर स्थल कौन–कौन से हैं ? उन्हें जानकर समझकर उन पर कार्य करने की जरूरत होती है। मार्ग तो पता है हमें, पर उस पर तरह–तरह के कांटे, ईंट, पत्थर, गंदगी आदि पड़े हैं। तीव्र गति से गमन करना है तो बस, बाधाओं को हटाएं और मार्ग प्रशस्त हो जाएगा।

बाहरी वातावरण, परिस्थितयाँ, लोग हमारे नियंत्रण में नहीं होते और होने की अपेक्षा रखना भी गलत है, परन्तु हम अपने आंतरिक संसार के ताज सहित बादशाह हैं, शंहशाह हैं। हम जैसा चाहे, जिस प्रकार जहां चाहें, कार्य कर सकते हैं–वहां हमारा हरेक कानून लागू होता है, हर एक बात बाइज्जत सुनी जाती है, ज्यों कि त्यों समझी जाती है, इसलिए बाहर की अपेक्षा पहले अपनी जरूरतों, सपनों, इच्छाओं को अंदर लागू करना होता है। अपने अंदर जितने हम स्पष्ट व साफ हो जाएंगे, उतनी ही बाहर की परिस्थितियां अनुकूल बनती जाएंगी। बाहर की बाधाओं के बादल स्वयं छंटने लगेंगे।

सूक्षमता से देखें तो यह हमारे नियंत्रण में होता है कि हम किस विचार को अपने अंदर उठने दें, उसे अनुमति दें, किसकों चाहे तो न दें। जिस विचार को हम चाहें हम रोक सकते हैं। हमें हर नकारात्मक, विध्वन्सात्मक विचार के लिए अपने मन पर प्रयासपूर्वक 'नो एंट्री' का बोर्ड लगाना होता है। फिर भी कुछ लोग, परिस्थितियां यदि जबरदस्ती अंदर घुसने कर प्रयास करें तो हमें ईश्वर ने श्वास रूपी चौकीदार, सुरक्षाकर्मी दे रखा है। इसकी सहायता से उस विचार को बाहर छिटक दें। जैसे अगर घर में कोई अतिथि आने वाला हो और उसके स्वागत के लिए हमने तैयारी कर रखी हो, सुन्दर व्यवस्था कर रखी हो, उसी समय कोई शरारती बच्चा आ कर उधम बचाए, इधर–उधर वस्तुओं को बिखेर दे–तो हम क्या करेंगे ? उसे पकडेंगे व यथासंभव प्रयास करेंगे कि वह हमारी बनी बनाई व्यवस्था को खराब न करे। ठीक यही अवस्था मन के आंगन की भी है। हमें वहां भी अपनी स्थिति को बनाए रखने का प्रयास करना होता है–कोई भी अनचाहा विचार, व्यक्ति, परिस्थिति उसमें हमारी आज्ञा के बिना अंदर न घुसने पाये। हम ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि हमारा हमारे मन पर राज्य हो–

मेरी इन्द्रियां हों सदा मेरे वश में,
मेरे मन पर मेरा ही अधिकार दो।
मेरा सिर झुके तो झुके मेरे दर पर,
मुझे ऐसा दुनियां में सरदार कर दो।

पांचो इन्द्रियों के विषयों व मन पर अपना नियंत्रण करने के लिए अपने श्वास रूपी सुरक्षाकर्मी को हमेशा सचेत रखें, जहां भी इस में थोड़ी सी ढ़ील हुई वहीं पर विघ्न, बाधाएं उत्पन्न हो जाएंगी। हम तभी तो ईश्वर को, उसकी सत्ता को नमन करते हैं। उसकी सहायता से ही हम अपने विचारों को रोक सकते हैं–यह कहते भी है और करते भी हैं–

हमारा नियंत्रण चूंकि हमारे अपने हाथ में है, यूं कहें कि हमारा रिमोट कन्ट्रोल जब हमारे हाथ में है तो दूरदर्शन पर चैनल भी हम ही बदलेंगे न। हम बाहर के दूरदर्शन को छोड़कर चित्त के दूरदर्शन के कार्य प्रारम्भ करें। वहां जो चैनल हम चलायेंगे, वही हमारे बाहर भी प्रदर्शित होगा। वस्तुतः बाहरी संसार हमारे आन्तरिक संसार का ही प्रतिबिम्ब है। जो भी परिस्थिति, इच्छा आप बाहर साकार हुई देखना चाहते हैं, उसे पहले अपने अंदर सफल होता हुआ चित्रित करें। अपने मन को शांत कर श्वाश से नियंत्रित करें तथा वह दृश्य अपने सामने जाकर उसे यथार्थ में परिवर्तित होता हुआ महसूस करें–अनुभूति के स्तर पर ले आयें। यह ध्यानावस्था में करने योग्य कार्य है। इच्छा व स्वपन के प्रति अपनी भावना, गहराई भी अहम् रोल अदा करती है। जितनी अधिक एकाग्रता से यह कार्य होगा, उतनी ही शीघ्रता व कुशलता से कम समय में बाहर की परिस्थितियां बिना आपके ज्यादा हस्तक्षेप के अनुकूलूता में बदलती जाएंगी।

सभार–परोपकारी

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

सेवा में बुक पोस्ट

भारत मां की शान को बढ़ाओ

(स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष)

•पं. नन्द लाल निर्भय, पलवल हरियाणा

वीर शहीदों की कुर्बानी, याद करो नौजवानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम!!

भारत के उन दीवनों ने, भारी संकट झेले थे!
भारत मां की रक्षाहित शोणित की होली खेले थे!।
कभी मौत से डरे नहीं थे, उन वीरों को जानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम!!

सांगा, अरु प्रताप, शिवा ने, देश का मान बढ़ाया था!
बाबर, औरंगजेब, दुष्ट अकबर का दम्भ मिटाया था!!
गोबिन्द सिंह बन्दा, नलुवा को, ठीक तरह पहचानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम!!

तात्या टोपा, तुलाराम, नाना साहब, लक्ष्मी बाई!
देश धर्म हित अंग्रेजों से, लड़े बहादुर बलदाई!!
जगत गुरू ऋषि दयानन्द के उपकारों को मानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम!!

पंडित नंद किशोर गौड, मंगल पांडे थे वीर बड़े!
हंस–हंस कर फांसी खाई, देश भक्त रणधीर बड़े!!
बनो लाजपत श्रद्धानन्द तुम, सुनो! देश दीवानों तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम!!

विस्लिम, शेखर, भगतसिंह ने, भारी लड़ी लड़ाई थी!
देश, धर्म पर भरी जवानी, खुश होकर भेंट चढ़ाई थी!!
फैशन की दो होड़ छोड़ तुम, होश करो नादानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम!!

भारत मां की ललनाओ! पवित्रता धर्म निभाओ तुम!
कौशल्या, सीता, सावित्री, अनुसुइया बन जाओ तुम!!
बनो देवकी, माता कुन्ती, ठान निराली ठानो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम!!

दुर्गा देवी किरण गई बन, रण में तेग बजाओ तुम!
देश द्रोही हत्यारों का, जग से नाम मिटाओ तुम!!
रेखा, हेमा, कैट, दीपिका, बनो न शायरा बनो तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम!!

वैदिक धर्मी बनो साथियो! भारी मौज उड़ाओगे!
अगर न दोगे ध्यान दोस्तो! फिर पीछे पछताओगे!!
"नन्द लाल निर्भय" जागो! इन्सान बनो, इन्सान तुम!
भारत मां की शान बढ़ाओ, वीर बनो मर्दानों तुम!!

साभार

श्रीमती मीनाक्षी पत्नी श्री राज सिंह गाँव व डा. सिद्धवाड़ी, तह. धर्मशाला, जिला कांगड़ा ने ₹ १००, श्रीमती बबिता कपूर पत्नी श्री विक्रम कपूर गाँव व डा. सिद्धवाड़ी, तह. धर्मशाला, जिला कांगड़ा ने ₹ १००की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।